॥ ॐ ॥

श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः

विदुषी शान्तिबाई कृत

श्री

शान्ति भजन दीपिका

सम्पादक

स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज ''अच्युत''

श्रीमहन्त—उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर–३४२००६ (भारत)

उत्तम प्रकाशन (आचार्य पीठ) के उपयोगी प्रकाशन
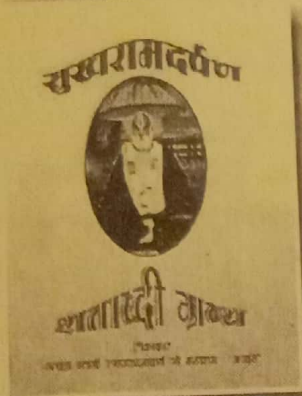
श्री सुखराम दर्पण

पूर्व प्रकाशति "**वाणी प्रकाश**" में प्रकाशित स्वामी सुखरामजी महाराज कृत चौरासी भजनों की सरस, सुबोध, दर्शनीय एवं प्रशंसनीय व्याख्या को '**अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका**' द्वारा एक-एक शब्द के अनेकार्थ अन्वय, टिप्पणी, भावार्थ सहित '**शताब्दी ग्रन्थ**' को चयनित करके रचयिता श्री की साकेत शताब्दी पर पुष्पाञ्जलि समर्पित की है। य ग्रन्थ मानव जीवन का मार्गदर्शन कर जीवन न सार्थक बनाने में सक्षम है।

यह 'सुखराम दर्पण' का शेष भाग है, जो अलग जिल्द में दिया गया है, इसमें वेदान्त के कई गूढ रहस्यों के सरलार्थ सहित अनेकानेक सधुकड़ी भाषा में पद-काव्य भजनों के रचयिता अन्यान्य विभिन्न सम्प्रदायों के भारत प्रसिद्ध सन्तों की रचनाओं में आये कठिन शब्दार्थों, जो बाजार के साहित्य में अनुपलब्ध है, का एक ही स्थान पर पठनीय संग्रह है। निस्सन्देह यह ग्रन्थ आध्यात्म प्रेमियों के लिए वरदान है।

आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द क

अचलराम दर्पण (शताब्दी ग्रन्थ)

वीतरागी योगीराज स्वामी उत्तमरामजी महाराज के भेष दीक्षा शताब्दी पर उ सतगुरुदेव स्वामी अचलरामजी द्वारा विर भजनों में भक्ति, वेदान्त, ज्ञान, साध विषयों के १०८ भजनों की यथार्थ व्याख्या तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाच महाराज द्वारा की गई है, जो कि मुमुक्षु के लिए अत्युपयोगी है।

❀ श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः ❀

श्री

शान्ति भजन दीपिका

रचयिता

श्री विदुषी शान्तिबाई वैष्णव

राजलदेसर-३३१८०२

सम्पादक

तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज

श्रीमहन्त—उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

प्रकाशक	हरि भक्तों के सहयोग एवं माताजी की अल्प बचत से— **रामनिवास वर्मा** शान्ति सदन, वर्मा निवास, स्टेशन के सामने–बाडी, P.O. राजलदेसर–३३१८०२ जिला–चूरू, राजस्थान
प्रतिरोध	© सर्वाधिकार रचयिता/सम्पादक द्वारा स्वरक्षित्
प्रसारित	कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष्य में
प्रथमावृति	विक्रम संवत् २०६२ सन् २००५ शकः १९२७
मूल्य	२५/– पच्चीस रुपये मात्र
शब्द-चित्रण	अचलोत्तम कम्प्यूटर, जोधपुर–३४२००६ **फैक्स/फोन** ०२९१–२५४७०२४
मुद्रक	विष्णु ऑफसेट प्रिण्टर्स १४८८, पाटोदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली

प्रस्तावना.........

प्रस्तुत ''श्री शान्ति भजन दीपिका'' सदगृही विदुषी शान्तिबाई नाभादासी (कत्थक) के संघर्ष एवं त्यागमयी सेवाभाव के अथक प्रयास की रचना है। जिसमें गुरुभक्ति, प्रभुविरह और अपने हृदय के वास्तविक अध्यात्म तथ्यों का वर्णन मर्माहत शब्दों का संचय है। उन्हीं में अपने एकाकी जीवन की कठिन परिस्थियों व ईश्वरप्राप्ति की छटपटाहट अनुभव भरी रचना है। जो प्रत्येक गुरुभक्तों में जिज्ञासुवृत्ति के पाठकों को हितप्रद पठनीय एवं अनुकरणीय है।

साधारण साक्षर होते हुए भी हर क्षण आपका ध्यान अध्यवसायी सतसंग, सन्तवाणी के चिन्तन में लगा जीवन है। जब भी देखो– सन्तों, महापुरुषों के शब्द–वाणी, शास्त्रों के पठन, अध्ययन में नित्य लीन रहना आपकी दिनचर्या बन गई है। मानो कि सतसंग करना व सतसंग कराना आपके जीवन का प्रमुख हिस्सा बन गया है। आपने अपने जीवन में सन्तों क़े सत्साहित्य का गहन अध्ययन किया है। आपके निवास स्थल पर हर तिथि, पूर्णिमा, एकादशी पर सतसंग का आयोजन रहता है, जिसमें स्थानीय नजदीक व सुदूर दूर स्थानों से सन्त, महन्त, जिज्ञासु सतसंगी आते रहते हैं तथा आध्यात्मिक चिन्तन, स्वाध्याय करते हैं। सबको व्यवधान रहित लाभ मिलता रहता है। आप की वाणी सत्यतापूर्ण ओजस्वी एवं मधुरता के साथ सीधी बोल–चाल की भाषा लिये अकाट्य राग–रागिनियों से ओत–प्रोत, निर्भीक वेदान्त तत्त्व एवं गुरुभक्ति, ईश्वर–विरह के साथ अपनी हार्दिक व्यथा का खुला दर्शन है। जिसको सुनने में चित्त को ईश्वरीय शान्ति का लाभ मिलता है।

मेरा इनसे सतसंग-सम्पर्क लगभग १८-२० वर्षों से है। आप साधारण वेश-भूषा, खान-पान व शुद्ध सात्त्विक, संयमशील से अपने छोटे से पारिवारिक कर्त्तव्यलीन शीलवृत्ति व्यवहार कुशल व्यक्तित्त्व से व्यतीत करते राजकीय चिकित्सालय राजलदेसर (रतनगढ़, जिला चुरू) में राज्य सेवारत समय व्यतीत करती विदुषी वृत्ति (साध्वी) से कम नहीं है। आपकी शिक्षा-दीक्षा अपनी माता साध्वी मूलीबाई के संरक्षण में हुई है। हमारा परिचय हमारे निवास पर आचार्य यात्रा प्रवास स्थल राजलदेसर (चुरू) में सतसंग के माध्यम से हुआ। जिसमें श्रीवैष्णव अग्रद्वारस्थ उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) जोधपुर के गद्दी नशीन आचार्य श्री श्री १०८ श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज जोधपुर से पधारते रहते है तथा निश्चित तिथि पर सतसंग का आयोजन अनवरत होता रहता है।

श्रीठाकुरजी (रामजी) से प्रार्थना है कि साध्वी शान्तिबाई की रचना सभी पढ़े व आध्यात्मिक लाभ उठावें। श्री विदुषी शान्तिबाई ने आध्यात्मिक सन्तधारा में सतसंग रूपी एक सुवासित प्रयास किया है। वास्तव में उनका जीवन साधुवाद का पात्र है। आपकी मिलनशीलता प्रेमाभक्ति सतसंगवृत्ति साधु-सन्तों, विद्वानों का सान्निध्य, त्याग, तपोनिष्ठ विरहावस्था का जीवन प्रेरणादायी है। आप की लग्न एवं पारिश्रमिक पुरुषार्थ सराहनीय है। आपके उत्तरोत्तर सुभविष्य की मंगलकामना करते हुए प्रस्तुत रचना समाज के लिये एक उपयोगी अंग में सिद्ध होगी। ऐसी आशा के साथ........

भवदीय

बारुपाल भवन, **हरिप्रसाद बारुपाल**

९ अप्रेल २००५ निवृत्त वरिष्ठ लिपिक (शिक्षा विभाग)

चेत्र शुक्ला १; वि. सं. २०६२ अगूणा मोहल्ला, राजलदेसर (चूरू)

अपनी बात.........

जगत् की नियति में शास्त्रज्ञ मनीषी जनों का निर्णीत विषय है कि किये या हुए दुष्कर्मों की निवृत्ति का सरल एवं सीधा प्रायश्चित् उपाय है—अपने द्वारा पापों को प्रकट करने पर स्वतः दोष निवृत्ति मिलती है। किसी अन्य द्वारा परिचय लिखने पर अतिशयोक्ति या विषमताजन्य शब्द आ ही आते हैं। अतः स्वयं द्वारा लिखा आत्म-परिचय वास्तविक जीवनी है।

दक्षिण भारत में एक ब्राह्मण थे। सभी प्रकार से सुख-सम्पन्न होने पर भी सन्तान बिना दुःखी रहते थे। एक बार एक सन्त आप के द्वार पर आये। इन्होंने सन्त का बड़ा सत्कार किया। दयाल चित्त सन्त इनकी सेवा से बड़े प्रभावित/प्रसन्न हुए और कुशल-मंगल के सिलसिले में इनकी उदासी का कारण पूछा, तब इन्होंने अपनी मनोव्यथा निवेदन की। सन्तश्री ने हनुमान्‌जी की आराधना बतलाकर दृढ श्रद्धा-विश्वास जमाने का पद सुनाया। ब्राह्मण दम्पत्ति ने सन्त के उपदेश पर अति विश्वासपूर्वक सन्तान की इच्छा से बारह वर्ष तक हनुमान्-आराधना की तब इष्ट-प्रसन्नता से हनुमान्‌जी ने दर्शन दिये और वरदान माँगने को कहा। ब्राह्मण ने वर मांगा। श्रीहनुमान्‌जी भक्त, भक्ति और भगवान् का संयोग करानेवाले है। ब्राह्मण ने भी श्रीहनुमान्‌जी से भक्ति व भगवत्-दर्शन न चाहकर पुत्र मांगा। हनुमान्‌जी ने कहा—''भाई! पुत्र का ठेका हमारा नहीं है, यह तो भगवद्दाधीन है।'' उत्पत्ति निमित्त भगवान् है, उन से कहना पड़ेगा, तुरन्त हनुमान्‌जी ने परम-प्रभु से निवेदन किया। श्रीप्रभु ने कहा—इन्हें सात जन्म तक पुत्र का संस्कार नहीं है। आकर बजरंगी ने द्विज दम्पत्ति से वही कहा, तब भक्त ने कहा—महाराज! यदि मेरे भाग्य में पुत्र लिखा होता तो मैं आपके द्वार का भिखारी क्यों बनता?, आप समर्थ है। हनुमान्‌जी अपने सहज

कोमल स्वभाव से भक्त के चातुर्य से प्रसन्न हो गये और पुत्रवान होने का वर देते हुए कहा कि—मैं स्वयं तुम्हारा पुत्र बनूँगा। इसी फलस्वरूप से कालान्तर में श्री हनुमान्‌जी ब्राह्मण पुत्र बने। चूँकि यह बात प्रसिद्ध थी कि ब्राह्मण के कोई सन्तान नहीं है। अतः पुत्र जन्म के बाद जब गोद में लिए पुत्र को देखते तब सहज स्वभाव से उन से लोग पूछते रहते कि यह किसका बालक है? अथवा क्या यह आपका पुत्र है? तो ये भावविभोर होकर सहज ही कहते कि श्री हनुमान्‌जी का पुत्र है, यह नहीं कहते कि श्रीहनुमान्‌जी ही है। परिणाम स्वरूप आगे चलकर इस कुल का नाम ''हनुमान् वंश (ढोली) या कला प्रेमी कत्थक'' हो गया।

इसी हनुमान् वंश में श्रीवैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय के अनन्त श्री स्वामी अग्रदेवाचार्यजी महाराज के परम शिष्य श्री भक्तमालाकार श्री स्वामी नाभादासजी महाराज हुए। आप नगभुज (नारायण) के नाम से प्रसद्धि है। आप अयोनिज हनुमत स्वेद से होने के कारण हनुमान वंशी (वानर क्षत्रीय) वंश से भी प्रसिद्ध हुए। एक छप्पय में श्री नाभाजी ने भक्त लाखाजी को वानरवंशी कहा है—

परमहंस वंशनि में, भयो विभागी वानरौ।

इस तुक की टीका करते हुए आद्य टीकाकार प्रियादासजी ने भक्तमाल में लिखा है—

लाखा नाम भक्त बाको, वानरो बखान कियो।
कहे जग डोम जासो, मेरो शिरमोर है॥

अर्थात् लाखाजी वानरवंशी (हनुमान्‌वंशी) तथा डोमवंशी थे, परन्तु यहाँ ज्ञातव्य है कि डोम शब्द कत्थक ब्राह्मणों के समकक्ष नृत्यगान प्रवीन जन्मजात गुणवान है। रीवॉ नरेश श्री रघुराजसिंह ने अपनी '''राम रसिकावलि'' कृति में ब्राह्मण वंश ''लाँगुली द्विजकेरो'' में स्पष्ट

किया है कि वानर (हनुमान) वंश या डोम (कत्थक) ब्राह्मणों के समकक्ष ही उत्तम वंश है।

एक कथा जीवनी में जयपुर नरेश मानसिंहजी ने उपदेश श्रवणार्थ श्री अग्रदासजी सहित श्री नाभादासजी (दोनों गुरु-शिष्य) को बुलाया। वहाँ नाभाजी का प्रभाव ईर्षा का विषय बन गया, समुचित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के बाद किसी ने श्रीनाभाजी का मान भंग करने के लिए बिना सोचे समझे जाति सम्बन्धी प्रश्न कर दिया। तब श्रीनाभाजी महाराज ने प्रथमतया प्रश्न को अनुचित/व्यर्थ ठहराया। यथा–

जाति न पूछो साधु की, पूछ लेहु तुम ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥१॥

मृतक चीर, जूठनि वचन, काक विष्ठ अरु मित्र।
शिव निरमायल आदि दे, ये सब वस्तु पवित्र॥२॥

घनाक्षरी छन्द

वायस के विष्टा ते पवित्र जानि पीपर को।
मृतक की चीर मृग-छाल जग जानिये॥
शम्भु निर्माल्य गंगा, जानो त्योंही जूठन है।
वच्छो सरस क्षीर-फेन उर आनिये॥
माछीते महक है उछार सुनो जानै जग।
इनमें न दोष यह, निश्चै ग्रन्थ बानिये॥
ऐसे ही प्रगट काहु, कुल में जु साधु होइ।
सदा है स्वरूप शुद्ध, पूज्य मन मानिये॥

भावार्थ–काक विष्ठा से उत्पन्न पीपल नित्य उत्तम है, मनुष्य की तो बात ही क्या वह देवताओं द्वारा भी पूज्य है।

काक विष्ठा समुत्पन्नो अश्वत्थं प्रोच्यते बुधै:।
दैवैरपि नरैर्वापि पूज्य एव न संशय:॥ –पद्मपुराण

मृतक मृग का चीर (चर्म) अर्थात् मृगछाला सदा पवित्र है। बछड़े का जूठन दूध सदा पवित्र होता है। शिवनिर्माल्य श्रीगंगा जी सदा परम पावनी है। मधुमक्खी और भौंरे सभी पुष्पों को सूँघते हैं, परन्तु वह सदा पवित्र ही होते हैं। वे पुष्प और उन पुष्पों से बना इत्र-शहद भगवान् को चढता है। ऐसे ही वैष्णव किसी भी कुल में उत्पन्न हो वे सदा पूज्यतम ही रहता हैं।

पुनश्च—

अर्चावतारो पादानं वैष्णवोत्पत्ति चिन्तनम्।
मातृयोनि परीक्षां च तुल्य माहुर्मनीषिण: ॥ — पद्मपुराण

अर्थात् भगवद्विग्रह की उत्पत्ति का उपादान कारण कि यह धातु, पत्थर की है, ऐसे ही वैष्णवों की उत्पत्ति और मातृयोनि परीक्षा करना, इन तीनों को पण्डितजन महापाप कहते हैं।

— सटीक **भक्तमाल प्रथम खण्ड**, श्री नाभाजी का चरित्र

नाभाजी का जन्म विक्रम संवत् १६०० के आसपास जयपुर अन्तर्गत धूला ग्राम में नगाड़ची राणा (ढोली) कुल (जिसे वानर वंशी भी कहते है) में हुआ था।

हनुमान सौ कुल चलि आया। सोई वानरा वंश कहाया॥
राणा भये ढूँढाहर मांई। नाभा उपजा तिन घर ठांई॥

— राजस्थान के सन्त-भक्त कवियों की हिन्दी साहित्य को देन

इसी पवित्र कुल-परम्परा में (राजस्थान के चूरू जिलान्तर्गत रतनगढ तहसील के छोटे से गाँव) प्रसनेऊ निवासी साधारण सात्त्विक स्वभाव के हरिभक्त कत्थक श्री सुगनारामजी खीची एवं माता श्री मति मूलीदेवी की कौक्ष से विक्रम संवत् २०१५ ज्येष्ठ वदि १ रवि (दिनांक ४ मई १९५८ ई०) को शान्ति बालिका का जन्म हुआ।

बाल्यावस्था ५ वर्ष की आयु में पिता श्री का स्वर्गवास हो गया।

दो भाई दो बहिनों के परिवार का लालन-पालन माताश्री द्वारा हुआ जो साधु-सेवी सद्विचारों से संस्कारित होने के कारण मुझे छोटी आयु में ही सतसंग (भजन-संगीत) के संस्कारों से अनुग्रहीत किया। यहाँ पर गाँव में मुझे साक्षर-विद्याध्ययन माताजी ने करवाया। सातवीं कक्षा उत्तीर्ण करके छुड़वा दिया। इस कारण उस आयु से अद्यावधि पर्यन्त भजन गाने, श्रद्धा से सतसंग सुनने का स्वाभाविक प्रेम रहा है।

सांसारिक पिताश्री की छाया नहीं रहने से सदैव पराधीन परमुखान्पेक्षी गुलामी के जीवन से गुजरना पड़ा, ऐसी परिस्थितियों में अच्छे सुसंग-प्रसंग नहीं मिल पाये। छोटी उम्र में ही विक्रम संवत् २०२५ चैत्र शीतलाष्टमी सोमवार दिनांक १० मार्च १९६९ को हम दो बहिन तथा एक भाई की एक भाटी परिवार में एक साथ ही विवाह कर दिया। गरीबी के कारण माताजी कुछ दहेज भी न दे पायी। जिससे पीहर-ससुराल के सभी लोग बदल गये।

कनिष्ठ प्रारब्ध कर्मों के कारण ईश्वरीय परीक्षा में तामसी दुर्गुणों का आसुरी सम्पत्ति सहित दुर्व्यशनों से भरा पति एवं ससुराल परिवार मिलने से सात्त्विकता को भूख-प्यास मार-पीट की विपत्तियों से संघर्षमयी जीवन गुजारना स्वाभाविक था, ऐसा अतीत जीवन संस्मरण करने में सर्वथा अयोग्य होगा, इस स्थिति में दो सन्तान गोद में आये।

श्रम एवं स्वाध्यायी जीवन

पठनार्थ गीता साथ रखती तो ससुराल में मार पड़ती, परन्तु अध्यवसायी जीवन को बचायें रखा। कभी-कभी घर के सभी सो जाते तब दीपक के प्रकाश में रात को सब से छुपकर पढ़ती। प्रातः पीसना पीसती तब घरवालों से छुपके पठन होता, जब उन्हें मालूम पड़ता, तब मार पड़ती। पूछते—बता! क्या पढ़ती है? एक बार गीता पठन करते देखा, मार पड़ी, फिर मैं खेत चली गई। मेरी अनुपस्थिति में

गीता, अचलराम भजन प्रकाश, मान पद संग्रह एवं चार सन्तों के फोटो जो बाँध कर रखे थे, वह सब जला दिये गये। उन के साथ पहनने के कपड़े, एक छोटी गीता श्लोक/दोहा स्वाध्याय करने को मेरे पास जो सामग्री मेरे पास थी, वह भी जल गये। सन्त-साहित्य का कोई ग्रन्थ हर समय छुपाकर मेरे साथ रखती, समय मिलते ही पढ़ती। सोती, पीसती, रास्ते चलती एवं जागते अर्थात् हर समय शास्त्रीय जीवन मेरा प्राण था। इस कारण घरवाले जलते-कुढ़ते रहते थे। **अचलराम भजन प्रकाश** सन् १९६९ का प्रकाशन मेरा जीवन आधार था। उसमें अचलरामजी के पीछे रामप्रकाशाचार्यजी का (आगे-पीछे) दर्शन चित्र देखकर सोचती कि भिन्न-भिन्न नामों से यह एक ही सन्त है। फिर ज्यों-ज्यों समझ आती रही, बड़ी होती/समझने लगी कि-यह दोनों अलग-अलग है। उनमें से एक भजन सीखा। ''**आलीरी! मैं तो रमता राम फकीर।**'' सोचती रहती कभी रमते-रमते मुझे सतसंग में मिल जायेंगे। नित्य माताजी के साथ सतसंग में जाया करती थी कि कहीं **अचलराम भजन प्रकाश** के फोटो वाले महाराज मिले, पाँच-सात वर्ष तक खूब खोज लगाई, कोई पता नहीं लगा। हताश हो गई कि यह संसार में जीवित है भी या नहीं? है तो कहाँ मिलेंगे? फिर पूछताछ शुरु की, जहां सतसंग होती वहाँ मैं जाती रहती, कोई पता नहीं चला, सतसंग जारी थी।

अगस्त १९८० में पतिदेव का निधन हो गया। उनके दो वर्ष बाद रामेश्वरलाल टाक (सैनी) के प्रयासों में भगवत्कृपा के आश्रय मेरी राजकीय चिकित्सालय राजलदेसर में राज्य सेवार्थ नियुक्ति हो गई। तब भी नगर में जहाँ सतसंग होती थी, वहाँ में जाती। यहाँ पता लगा-किसी ने बताया कि अचलरामजी के पीछे छपे फोटो वाले महाराज जीवित है और यहाँ आते है, फिर भी हमें दर्शन नहीं हुए। इस समयान्तर बीच-बीच में कई सन्तों का सत्संग, मार्गदर्शन, स्वाध्याय

ज्ञान मिलता रहा। इसी समयान्तर एक बार माताजी के साथ सतसंग हेतु कोलायत यात्रा हुई। वहाँ भक्त सहीरामजी किसी को विचार चन्द्रोदय पढ़ा रहे थे। कई भक्त बैठे थे, मैं भी वहाँ बैठ गई, मुझे अच्छा लगा। मैंने निवेदन किया कि महाराज मुझे भी पढ़ा दो। उन्होंने कहा कि राजलदेसर आऊँगा, तब पढ़ाऊंगा। मुझे यह ग्रन्थ पढ़ने की प्रबल इच्छा रही, ऐसे ही सात-आठ वर्षों का समय बीत गया, महाराज नहीं आये। सन् १९७५ में प्रजापतों की सतसंग में मुझे सहीरामजी के दर्शन हुए, तब मैंने निवेदन किया कि मुझे विचार चन्द्रोदय पढ़ा दो, तब उन्होंने विद्या पढ़ाना आरम्भ किया। विद्यागुरु मानते हुए सतसंग प्रक्रिया पूर्व तलाश जारी रखी। बीच-बीच में कई अन्यान्य सन्तों का सामीप्यवास मिलता रहा, थोड़ा-थोड़ा पढ़ती रही, वे सब अपनी-अपनी मति के अनुसार पढ़ाते रहें, किन्तु तसल्ली नहीं हुई।

एक समय सहीरामजी ने कहा कि वह अपने गुरु देवनाथजी को मेरे पास भेज रहे है। वे तुझे पढ़ायेंगे, तदन्तर वे पधारे। विचार चन्द्रोदय की छट्ठीं कला तक पढ़ाया, फिर कभी एक, कभी दो, ऐसा करके पूरा किया। फिर विचार सागर भी देखा, पढ़ा भी। देवनाथजी ने प्रकाश ब्रह्मचारी को भेजा, उन्होंने यदा-कदा विचार सागर पढ़ाया। किन्तु कई शंकाऐं चित्तवृत्ति में उठती रहने के कारण सन्तुष्टि नहीं हुई!

सन् १९८५ में एक सतसंगी था, जो महाराज रामप्रकाशाचार्यजी की सतसंग कहीं से सुनकर आया था, वह मुझे मिला, उनसे पूरी जानकारी मिली कि महाराज कहाँ रहते है? कैसे मिले? तब उन्होंने बताया कि वे पिछले कई वर्षों से राजलदेसर अगूणा मोहल्ला में आते रहते है। पता लगाया किन्तु पता नहीं लगा, कहाँ, किसके घर आते है?

एक बार जालजी भाई मीनालाल प्रजापत के घर सतसंग थी, उन से सतसंग का निमन्त्रण मुझे भी मिला, रात को सतसंग में गई,

वहाँ गुरुदेव विराजमान थे। सर्वप्रथम साक्षात् दर्शन वहीं हुए, फिर अनुमान लगाया कि फोटो वाले महाराजश्री यही है। तब प्रजापत भाइयों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि महाराज जोधपुर निवासी रामप्रकाशाचार्य जी है, तब पुनः प्रणाम किया। उस समय से निरन्तर अभिलाषा रहती कि महाराज जी से कब साक्षात्कार, सतसंग-चर्चा हो, कैसे निवेदन करुं कि मुझे चरण-शरणागत लो। सात-आठ सतसंगियों में परिचित हरिप्रसादजी बारुपाल भी बैठे थे। उन्हें मेरे विषय में कुछ जानकारी थी कि यह बहिन सतसंग करती है। सन् १९८१ से लगातार लगन से सन् १९९९ में दर्शन लाभ मिला। तब से हरिप्रसादजी बारुपाल के निमन्त्रण पर रात्रि सतसंग में जाती, भजन सुनाती, प्रवचन श्रवण करके आ जाती थी, कभी वार्तालाप का लाभ नहीं मिला। उसी समयान्तर मेरा जोधपुर जाना भी हुआ, किन्तु यात्रा प्रवास के समयाभाव में सतसंग साक्षात्कार का लाभ नहीं मिला।

भाई साहब हरिप्रसादजी सुलझे हुए विचारों के गुरुभक्त, सम्प्रदाय-निष्ठ परम सतसंग प्रेमी है। जिन के घर पर सतसंग का आयोजन होता रहता है। जहाँ कोई न कोई सात्त्विक सन्तों का समागम होता रहता है। अपनी वहाँ भी उन से मनोजिज्ञासा प्रकट नहीं कर पाती थी, मानसिक भय बना रहता, प्रवचन सुनती, भजन सुनाती और दर्शन करके वापस चली जाती।

एकदिन भाईजी हरिप्रसादजी से अर्ज की कि महाराजजी का कोई साहित्य है क्या? यदि कोई हो तो कृपा कर मुझे दीजिये। तब भाईजी ने अलमारी खोलकर स्वामीजी द्वारा रचित/लिखित साहित्य दिखाया, वहाँ मानो शास्त्रों का भण्डार खोला है। उनमें से एक छोटी-सी किताब ''रामप्रकाश भजन माला'' पढ़ने को ले गई, फिर एक दिन देने को कहा, तब भाईजी बोले कि वे साहित्य घर पर पढ़ने को नहीं देते हैं, चूंकि लोग ले जाते हैं, वह वापस नहीं लौटाते हैं, जो खरीदते

है, उन्हें ही देता हूँ, साहित्य बहुत है। तब मैंने निवेदन किया कि यह लो पहले वाली, दूसरी किताब दो, यह मेरी परवश उदासीनता देखकर भाईजी को दया आ गई। दूसरी, तीसरी, चौथी इस तरह एक के बाद एक ग्रन्थ देते रहे, क्रमशः ले जाती और पढ़कर वापस लौटा देती रही। इस तरह उत्तम आश्रम के प्रकाशन को लगभग देखा, पढ़ा और समझा। तब साधु-साधनों, सनातनधर्म के आध्यात्मिक पँच वाद, अर्थ-पंचक, त्रय-तत्त्व, धर्म-सम्प्रदाय के व्यवहारिक पंच सिद्धान्त, आदि के ज्ञान से ऐसा लगा कि आज यत्र-तत्र गृहस्थ में रहकर बानाधारी सन्त बनकर प्रचारित हो रहे हैं, वे सभी उपेक्षित रूप से है। वस्तुतः मैं अपने समय से भूल भरी भ्रमावस्था में ऐसे भेषधारी सन्तों के साथ लगी रहीं, जिससे लोगों की भीड़ इकट्ठी हो सके और सबका मनोरंजन हो जाय, इसी में हमारा उपयोग होता रहता।

उनमें से कई भेषी सन्तों ने हमारी रचना के भजनों की ही चोरी करके अपने-अपने नाम की छाप लगा कर तथाकथित योग्यता बताने/गाने लगे एवं मुझे अपनी पुस्तैनी शिष्या ही मानने लगे। वस्तुतः सन्तों को गुरु स्वरूप ईश्वरीय भाव से देखती, जिनसे विद्या पढ़ती, उन्हें विद्यागुरु का दर्जा दिया, किन्तु मनन/मानसिकता से सतगुरु शरणागति नहीं ले पाई थी, जिस की सदा खोज रही।

विक्रम संवत् २०६० कार्तिक पूर्णिमा रविवार, दिनांक ९ नवम्बर २००३ को गांव राजपुरा (जिला सीकर) निवासी मदनलाल सर्वा की सतसंग (कुलदेव हनुमन्त सवामणि प्रसाद) का हमें निमन्त्रण मिला। भाईश्री हरिप्रसाद बारुपाल के साथ मैं भी गई, तब रात्रि भजन व्याख्या, सन्त-सान्निध्यवास चर्चा का सुअवसर मिला, जिसे मैं अपने भाग्य का सर्वोत्तम क्षण मानकर लाभान्वित हुई। तब से निरन्तर सतसंग, सान्निध्यवास, शास्त्र-चर्चा, आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान, **उत्तम प्रकाशन का अपार साहित्य भण्डार** पढ़ने को मिला, ज्ञान सम्प्रदाय,

आश्रम नियमों की जानकारी प्राप्त करके पूर्णरूपेण आत्म सन्तुष्टि हुई। तब मुझे उत्तम आश्रम सन्तदासोत साधु संस्थान (प्रन्यास) की आजीवन सदस्या बनने का सौभाग्य मिला और वि.सं. २०६२ ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवार दिनांक १६ जून २००५ के गुरुदीक्षा पर्वोत्सव में श्री साध्वी अन्नपूर्णाबाई एवं हरिप्रसाद भाईजी के अथक प्रयास से मेरे भाग्य की जागृति में सतगुरु शरणागत का परमाश्रय मिला, मैं धन्य हो गई।

रचनात्मक परिचय

अपने जीवन की कठोर विपत्ति, संकट भरे दुःखों के क्षण में शास्त्रीय स्वाध्याय, महापुरुष सन्तों की रचनाओं को पढ़ना, सीखना और संगीत प्रेम सदा से मेरा आश्रय कर्म रहा है। संघर्ष भरे जीवन में ईश्वर, सतगुरु के प्रति जो भाव उभारे, उन्हीं पदों में से कुछ रचना पद छाँटकर प्रस्तुत किये जा रहे है। कई शताधिक्य, भजन लिखे पड़े है, जो भविष्य में कभी संयोग बनेगा तब आपके हाथों में प्रस्तुत होते रहेंगे।

हमारे अनुनय को स्वीकारते हुए सतगुरुदेव ने अपनी बात में श्री नाभादासजी महाराज की खोज के साथ जोड़कर मेरे टूटे-फूटे शब्दों के सम्पादन/प्रकाशन व्यवस्था से कृपा की, जिनका आभार सदा चिर स्मरणीय रहेगा।

प्रस्तुत प्रकाशन में वर्ण शब्द काव्य दोष या कहीं किसी प्रकार की त्रुटि दृष्टि में आवे तो बाल बुद्धि की भूल को सुधार कर पढ़े।

धन्यवाद।

शान्ति-साधना कुटी, राजलदेसर
गुरुपूर्णिमा, २०६२; २१ जुलाई ०५

आत्मशान्ति की खोज में
शान्ति वर्मा

विदुषी शान्तिबाई कृत

शान्ति भजन दीपिका

के भजनों की अकारादि क्रम से अनुक्रमणिका

❑❑❑

श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः

विदुषी शान्तिबाई कृत

श्री

शान्ति भजन दीपिका

भजन (१) राग देश धनाश्री बधावा

सईयों ! सतगुरु मोहि प्यारा ए।
क्या मैं कहूँ कुछ कहा न जावे, प्राण आधारा ए।।टेर।।
गुरु सम प्रिय और ना दूजा, पूर्ण पतियारा ए।
खोज लिया में अन्दर बाहिर, यह जग सारा ए।।१।।
है प्रतिपाल दयाल दातारा, पर उपकारा ए।
दे उपदेश अनन्तों तारे, किये भवपारा ए।।२।।
गुरु गंगा गुरु गोमती यमुना, काशी कैदारा ए।
अड़सठ तीर्थ हाजिर गुरु चरणों, गुरु सिरजन हारा ए।।३।।
क्या मुख वरणूं शोभा गुरु की, अपरम्पारा ए।
ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादिक, कथ कथ हारा ए।।४।।
''रामप्रकाश'' गुरु भेटिया, भल भाग हमारा ए।
''शान्ति'' करें प्रणाम चरण में, बारम्बारा ए।।५।।

भजन (२) राग देश धनाश्री पद बधावाँ

प्रथम गुरुदेव मनाऊं ऐ।
हाथ जोड़ हाजिर चरणों में, शीश नमाऊं ऐ।।टेर।।

तन मन वचन समर्पण सेवा, ध्यान लगाऊं ए।
पल पल पूजा आरती वन्दन, चरण चित्त लाऊं ए॥१॥
मंगल मूर्ति सुरत निज बसगी, प्रेम से पुजाऊं ए।
भाव भजन अरु लगन मगन होय, राम रिझाऊं ए॥२॥
और उपासना छोड़ मोड़ मुह, हरि गुरु ध्याऊं ए।
हो चाहे कष्ट भृष्ट न होया, निज इष्ट निभाऊं ए॥३॥
सतगुरु शरण ज्ञान गुण सागर, मल मल नहाऊं ए।
दया प्रताप साफ शुद्ध हो, तिहुं ताप बुझाऊं ए॥४॥
गुरु महाराज सरताज हमारे, सुणो सब को बताऊं ए।
गुप्त भेद प्रकट पद परस्या, मैं बलि जाऊं ए॥५॥
गुरु श्री "रामप्रकाश" दयालू, अरज सुनाऊं ए।
"शान्तिबाई" शरण में आई, अब गुरु गुण गाऊं ए॥६॥

भजन (३) राग बधावा पद

सईयों मोरी ! कब मिलसी गुरु दाता।
कर इन्तजार हार गई मन में, कहीं न दीखे आता॥टेर॥
बिन गुरु पाट ठाठ सब सूना, बाट जोऊं दिन राता।
कब घर आवे दरश दिखावे, खोल करूं दिल बाता॥१॥
खाऊँ ना पीऊँ जीऊं अब कैसे, पल पल याद सताता।
विरह बीमारी लागी बढभारी, जीव घणों घबराता॥२॥
श्याम संयोग होय कब सजनी, वियोग सहा ना जाता।
बन जोगन बिचरूं मठ मन्दिर, फिर फिर खोज लगाता॥३॥
अष्ट सिद्धि नव निधि न मांगूँ, नहीं कुटुम्ब कुल नाता।
गुरु सेवा चरणन की भक्ति, और कछु ना चाहता॥४॥

"रामप्रकाश" गुरु परम पुरुषोत्तम, जानो विश्व विधाता।
"शान्ति" सदा शरण सुखदाई, रहूँ प्रत्यक्ष गुण गाता ॥५॥

भजन (४) राग बधावा पद गाने का

समझ सतगुरुजी से आई ए।
हो शरणागत संशय मिटाया, अति सुखपाईए।टेर॥
लख चोरासी मोटी फांसी, बड़ी दुःखदाई ए।
गुरु कृपा कृपालु दाता, सत सेन लखाई ए॥१॥
अनन्त जन्म की मोह निन्द्रा से, आय जगाई ए।
आर्त जान अपनाई अब के, शरण लगाई ए॥२॥
जन्म मरण भव रोग बिमारी, काट भगाई ए।
औषधि पाय अमर कर निर्भय, अब कुछ भय नाई ए॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूर्ण, प्रसिद्ध जग मांई ए।
"शान्तिप्रकाश" शरण सतगुरु की, महिमा गाई ए॥४॥

भजन (५) राग आसावरी पद गाने का

गणपति ! देव बड़ा कृपाला।
मैं शरणें सुध बुध दो स्वामी, सुण लो अर्ज सुण्डाला।टेर॥
प्रथम ध्यान धरूं गणपति का, शिव शक्ति का बाला।
पल पल घड़ी घड़ी में सिमरुं, फेरूं आप की माला॥१॥
लघु मति दीन कर्म का हीना, ज्ञान ध्यान बिन खाला।
तिमिर अज्ञान अन्धारो भरियो, उर में करो उजाला॥२॥
हूँ मैं दास दया करो मोपर, खोलो हृदय का ताला।
ज्ञान प्रकाश भरो घट भीतर, बुद्धि बोध रसाला॥३॥
तन मन भूल भ्रमना सारी, दूर हरो ततकाला।
सब विधि शासक विघ्न विनाशक, सामर्थ दीन दयाला॥४॥

गण आगर गुण सागर दाता, शोभा परम विशाला।
रिद्धि सिद्धि सार भण्डार दयावर, करदो मालो माला ॥५ ॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम पुरुषोत्तम, गोविन्द श्री गोपाला।
''शान्ति'' शरण सहायक तुम हो, भक्तों के रखवाला ॥६ ॥

भजन (६) राग आसावरी, धनाश्री पद गाने का

ज्ञान सतगुरुजी से लेल्यो ए।
ना कोई फीस मुफ़्त में देवे, नाहिं लगे अधेलो ए।।टेर॥
मल विक्षेप आवरण उर में, अन्तःकरण मेलो ए।
मल मल धोय लगा सत साबुन, जब चमकेलो ए॥१ ॥
श्रवण मनन निदिध्यासन कर, हित चित्त से चेलो ए।
जब परसे प्रीतम घट भीतर, है नित नित भेलो ए॥२ ॥
कर उर प्रीत रीत लख आदू, नेम दृढ़ झेलो ए।
तन मन धन सर्मपण हो, फिर निर्भय खेलो ए॥३ ॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम पुरुषोत्तम, देउं सबको हेलो ए।
''शान्तिप्रकाश'' दास चरण में, सब मेट झमेलो ए॥४ ॥

भजन (७) राग देश, धनाश्री बधावा पद

सईयों मेरा गुरु ब्रह्मज्ञानी।
ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ वैरागी, ब्रह्मरूप विद्वानी ।।टेर॥
वेद वेदान्त सिद्धान्त दृष्टान्त कर, भिन्न भिन्न कर समझानी।
सुता जगाया अलख लखाया, मेट दी खैंचातानी ॥१ ॥
ब्रह्म विचारे भ्रम विडारे, तारे सारे जीव अज्ञानी।
संशय भ्रम कर्म सब काटे, दुतिया दूर करानी ॥२ ॥
कर चेतन सुमिरण दे साचो, उलझा मन सुलझानी।
मिथ्या असार विसार प्रपंच, सुख स्वरूप लखानी ॥३ ॥

शोभा अपार गुणों का सागर, सारे सुखों की खानी।
शेष महेश दिनेश रट थाक्या, क्या मुख होय बखानी ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ मिल्या, सुधर गई जिन्दगानी।
उत्तम धाम जागीरी पाई, "शान्ति" गुरु महरबानी ॥५॥

भजन (८) राग देश, धनाश्री बधावा पद गाने का

ऐसा गुरुदेव दयाला ए।
देख डूबत भवसागर मांही, पकड़ निकाला ऐ।टेर॥
अनन्त जन्म का बिछड़ियां को, गुरुजी सम्भाला ए।
दे उपदेश कलेश किया दूरा, विघ्न सब टाला ए॥१॥
आत्म ज्ञान अमिरस पायो म्हाने, भर भर प्याला ए।
तृप्त भयो आनन्द छायो उर, होया मतवाला ए॥२॥
ज्ञान विज्ञान शान शुद्ध दिवी, पूर्ण प्रति पाला ए।
अपना आप लखाया आत्म, खुल गया ताला ए॥३॥
अहं मेट लेट गया चरणन, तज कपट कुचाला ए।
श्वासो श्वास सुमिरण सत्य धारण, घट होया उजियाला ए॥४॥
गुरुवर "रामप्रकाश" जी दाता, परम विशाला ए।
"शान्ति" शरण भई अब निर्भय, भेद निराला ए॥५॥

भजन (९) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! सतगुरु सामर्थ मेरा।
बन्धन तोड़ किया निरबन्धन, काट चौरासी फेरा।टेर॥
ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मरूप अवतारी, दिया शब्द तत सेरा।
त्रिगुण ताप तिमिर सब भागा, जाग्या भाग भलेरा॥१॥
गुरु कृपाल मिले ब्रह्मज्ञानी, हो बड़भागी चेरा।
सेवक जान शरण में लेवे, करत नजर से नेरा॥२॥

राम नाम का सुमिरण दीना, हित चित से उर हेरा।
जागी जोत होया प्रकाशा, मिटिया भ्रम अन्धेरा ॥३॥
गुण सागर विद्वान दयालु, शोभा सकल घणेरा।
शेष महेश गावे सब संत जन, अगम निगम चौफेरा ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ साचा, सुमरूं सांझ सवेरा।
"शान्तिदास" आस एक थारी, चरण शरण में डेरा ॥५॥

भजन (१०) राग आसा टोडी पद

लागो महारो गुरु चरण से हेत।
तन मन वचन समर्पण शरणे, नित उठ शीश नवेत ।टेर॥
जन्म जन्म का अन्धा भोंदू, सूता पड़ा अचेत।
घर परिवार मोह में मूर्ख, जन्म मिलायो रेत ॥१॥
गुरु गम गुंझ देव गुरु दाता, विपता सब हर लेत।
जन्म मरण भव बन्धन काटे, अजर अमर कर देत ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ अहंकारा, यह बड़ जोर डकेत।
ज्ञान ध्यान रु सुमिरण चिन्तन, खाग्यां काया खेत ॥३॥
सोहं शब्द किया गुरु सुमिरण, टूटा सब भ्रम द्वैत।
महर भई जब महरम पाया, निश्चल अचल अद्वैत ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु कृपा कीनी, इस विधि भई सचेत।
"शान्ति" शरण शोभा क्या वरणूं, तारयो कुटुम्ब समेत ॥५॥

भजन (११) राग आसावरी पद

साधो भाई ! सतगुरु सामर्थ ऐसा।
सब गुण सम्पन्न महा सुखखानी, और नहीं गुरु जैसा ।टेर॥

ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ दातारा, द्वैत ना व्यापे लेसा।
सर्व विधि ज्ञाता विश्व विधाता, महरम परम विशेसा ॥१ ॥
शब्द सुणाय मिटाय भरम तम, कटिया राग रु द्वेसा।
भीतर तार एक लिव लागी, निज स्वरूप लखेसा ॥२ ॥
त्रिगुण स्वरूपी साक्षी देवा, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
निराकार साकार चराचर, गोपति ईश गणेशा ॥३ ॥
ज्ञान भान होय उर प्रकाशे, काटे कर्म कलेशा।
शरणे आया दरसन पाया, मिटिया भ्रम अन्देशा ॥४ ॥
ज्ञानी ध्यानी ज्ञाता वक्ता, पूर्ण परमार्थ पेसा।
अभय दान दे आरत जीवों को, दीन दयालु कैसा ॥५ ॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूरा, दिया सत्य उपेदशा।
"शान्तिदासी" शरण अविनाशी, शरणे रहूँ हमेशा ॥६ ॥

भजन (१२) राग आसावरी पद गाने का

सतगुरु मिलिया रामप्रकाश।
सतगुरु मिलिया अन्तर खिलिया, होयो तिमिर को नाश ।।टेर ॥
अनन्त जन्म में भूली भटकी, फिर फिर भई निराश।
मिलिया स्वामी मिटी गुलामी, हटी जगत की त्रास ॥१ ॥
दया करि मेरे दयालु दाता, अपनाई लख खास।
सुती जगाई राह लगाई, पूर्ण कर दी आस ॥२ ॥
पल पल ध्याऊं विसर न पाऊं, सुमिरण श्वासोश्वास।
तन मन वचन समर्पित शरणे, चरण कमल में वास ॥३ ॥
"रामप्रकाश" गुरु कृपा सागर, मैं चरणों की दास।
"शांति" आई शरण बक्शाई, आर्त सुन अरदास ॥४ ॥

भजन (१३) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसा दियो भजन बड़ भारी।
ऊठत बैठत जागत सोवत, सुमिरण साँझ संवारी।।टेर।।
पल पल छिन छिन कबहुं न बिसरूं, श्वासो श्वास उचारी।
तार ना टूटे कभी ना छूटे, मिली है मौज अपारी।।१।।
इन सुमिरण से अखण्ड सुख उपज्यो, मिट गई दुतिया सारी।
खुलिया नैन निरखियो निर्गुण, मिली प्रीतम से प्यारी।।२।।
पाया श्याम काम सब पूर्ण, तृष्णा दूर विडारी।
पूर्ण आस त्रास मम टूटी, मन ममता को मारी।।३।।
श्री गुरु "रामप्रकाश" सामर्थ, मिलिया पर उपकारी।
"शान्ति" दासी काट दी फांसी, गुरु महा अवतारी।।४।।

भजन (१४) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसा मोहि शरण में राखो।
दीन दयाल दया बक्षाओं, गुण नहीं भुलों थांकों।।टेर।।
जान बड़ा थांरी शरण में आयी, शिष्य मान चरणा को।
तुमही मात तात गुरु स्वामी, हाथ धरो करुणा को।।१।।
मैं अजानी देखो मेरे कानी, ज्ञान ध्यान नहीं फाको।
आप दातार भण्डार ज्ञान के, सार शब्द निज भाको।।२।।
यह संसार प्यार मतलबीया, मार मचावे हाको।
स्वार्थ हेत करे सब प्रीति, काढे आपको नाको।।३।।
शरणे आये को शरणे राखो, दया की दृष्टि झांको।
दया विचारों मृतक उभारो, बीत गयो है खाखो।।४।।
आप अविनाशी काट दो फांसी, क्यों ओछी अब ताको।
अरज सुणाऊं बड़ी दुःखपाऊं, मुश्किल धिकणो धाको।।५।।

''रामप्रकाश'' गुरु परम पुरुषोत्तम, क्या वरणूं महिमा को।
अगम अपार अथाह अपरबल, ''शान्ति'' गार: गुण थाको ॥६॥

भजन (१५) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसा तुम बिन कौन हमारो।
तुम्हीं कृपाल करुणा के सागर, मैं हूँ दास तुम्हारो ।टेर॥
अनन्त जन्म का बिछड़ा भटकूं, न कोई संग सहारो।
करूं पुकार दातार दुवारे, दास अति दुःखियारो ॥१॥
मात अरु तात कुटुम्ब कुल बन्धु, स्वार्थ को जग सारो।
कोई सहायक अति दुःखदायक, चहुं दिस घोर अन्धारो ॥२॥
मैं अनजान आसरे थाँरे, दया की नजर निहारो।
तुम्हीं सरताज संचालक मालिक, तुम्हीं सिरजण हारो ॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, महिमा अपरम्पारो।
''शान्तिदासी'' दर्शन प्यासी, वन्दन साँझ सवारो ॥४॥

भजन (१६) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां थाने पल नहीं भूल सकां।
रहे आसान सदा जीवन भर, जब तक प्राण हकां ।टेर॥
आछी सेन दिवी म्हाने साची, अब काची काई तकां।
राम धुन माची रग रग राची, जाची जिज्ञासु जकां ॥१॥
भवसागर बहुत दिन भटक्यो, खाया खूब धकां।
गुरुगम रमझ समझ अब आई, वृथा नाहि बकां ॥२॥
शरण तिहारी लागत प्यारी, आवत नहीं अकां।
छवि निराली मगन मतवाली, निरखत नाहिं थकां ॥३॥

हालों ना चालों डिगों नाहीं डोला, ऐसा होय पकां।
आसन मार अडिग होय बैठा, निर्भय लाय डंका॥४॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ मिलिया, अलखता दिवी लखा।
कहे ''शान्ति'' लखिया सो भखिया, रोक्या नहीं रूकां॥५॥

भजन (१७) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! मेरा स्वरूप अक्रिये।
क्रिया कर्म लगे ना मेरे, नहीं उपासना उरिये।टेर॥
पांच तत्त्व त्रिगुण नहीं मुझमें, चार सात से परिये।
पांच क्लेश लेस ना कोई, देश वेश ना करिये॥१॥
जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति नाही, नहीं मेरे मैं तुरिये।
उत्पत्ति थिति लय प्रलय ना, वार वतन ना वरिये॥२॥
मुझ में रैन दिवस ना वारा, ना शशि ना सूरिये।
काया ना माया धूप ना छाया, न जन्म ना मरिये॥३॥
वाणी वेद अभेद भेद नहीं, खेद छेद सब टरिये।
दृश्य अदृश्य शोक ना संशय, जुक्त मुक्त ना जरिये॥४॥
''रामप्रकाश'' गुरु अमर अनादि, व्यापक चर अचरिये।
बन्द न छन्द फन्द ना मेरे, ''शान्ति'' अजर अमरिये॥५॥

भजन (१८) राग आसावरी पद गाने का

जगत् में व्यापक ब्रह्म भरपूर।
खण्ड ब्रह्मण्ड चराचर अन्दर, सब में है परिपूर।टेर॥
आदि अचल अटल अविनाशी, जगत विनाशी कूर।
अविगत अकत बिगत ना वाणी, निरमल निश्चल नूर॥१॥

अव्यय अछेद अशोष्य, अदृश्य अकृत कृत करूर।
अजर अमर अक्षय अनुपम, अद्भुत असल अंकूर ॥२॥
अगम अथाह अपार असीमित, अनुभव अमल अफूर।
निज निर्माया अटल थिरथाया, नहीं निकट ना दूर ॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु मिले दयालु, किया भरम सब चूर।
"शान्तिबाई" आप अविनाशी, हाजर सदा हजूर ॥४॥

भजन (१९) राग आसावरी पद गाने का

तूने मुझे लखाया गुरु दयाली, मैं लखीया लख आया गुरु दयाली ए।टेर॥
यह संसार स्वप्न वत सारा, जु उदक मे चमके तारा।
रज्जु भुजंग सम किया विचारा, अनिर्वचनीय पाया ॥१॥
खण्ड ब्रह्मण्ड सब तूँ ही उपजाया, सब में तूँ तुझ माय समाया।
उत्पत्ति प्रलय में तूँ नहीं आया, तेरी निराली माया ॥२॥
अज अविनासी रूप निज तेरो, सो मैंने निश्चय कर हेरा।
मिथ्या प्रपंच सब किया निवेरा, अविगत अचल अमाया ॥३॥
अधिष्ठान जान सब जग को, चेतन स्थावर जंगम को।
परिपूर्ण तन मन रग रग को, घट घट मैं थिर थाया ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ मिलिया, मिटी द्वैत सब अन्तर खुलिया।
भ्रम कर्म सब दूरा जलिया, आपे में आप समाया ॥५॥

भजन (२०) राग आसावरी पद गाने का

परम गुरु ! हेलो सुणिये मेरो।
आर्त ऊभो अरज गुजारे, शिष्य समझ कर तेरो।टेर॥
यह जग माया जाल बिछाया, बंधियो बन्धन घणेरो।
उलझ्यो जीव बड़ो दुःखपाऊँ, भूल गयो निज चेरो ॥१॥

दुःख दुविधा विपत्ति आपदा, आय लगायो डेरो।
अति अकुलावे जीव घबरावे, कैसे छुड़ाऊँ लेरो ॥२॥
भयो उदास आस सब छूटी, नाश होयो इन देहरो।
करूं विलाप ताप तिहुँ हरिये, करो नजर से नेरो ॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, दया की दृष्टि गेरो।
''शान्तिदासी'' बड़ी उदासी, काटो चौरासी फेरो ॥४॥

भजन (२१) राग आसावरी पद गाने का

गुरुदेव दाता मैं चरणन का दास।
करुणा निधान जान शिष अपना, राखो आपके पास ।टेर॥
भवसागर में भूला भटकों, निर्बल अति उदास।
कर कृपा मोहि पार उतारो, फिर फिर होयो हतास ॥१॥
अति बेहाल काल सिर घूमे, छूटी जीवन आस।
है वरनायक सब सुखदायक, उरमें करो निवास ॥२॥
मैं मतिमन्द अन्ध अज्ञानी, सहूं घणेरी त्रास।
भुजा पसारो डूबत लारो, रट रह्यो श्वासो श्वास ॥३॥
बड़ो दुःख पाऊँ अरज सुनाऊँ, सुणो आर्त अरदास।
मत ठुकराओ शरण लगाओ, समझ आपणो खास ॥४॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम दयालु, ओ म्हाने विश्वास।
''शान्तिबाई'' को शरणे राखों, करो ज्ञान प्रकाश ॥५॥

भजन (२२) राग आसावरी पद

गुरु देव दाता मैं चरणन आधार।
शरणागत को शरण राखिये, भूलूं ना उपकार।टेर॥
मात रु तात कुटुम्ब कुल नाती, स्वार्थ का संसार।
स्वार्थ हित प्रीत कर मीठी, दे ऊण्डो ओसार ॥१॥

मीत रीत सब है मतलब के, बन्धन बान्धे हजार।
ना कोई अपना झूठा सपना, देखा सोच विचार ॥२॥
आप सुरज्ञानी सब सुख खानी, दानी और दातार।
दया विचारो शिष्य हूँ थारो, सुनलो मेरी पुकार ॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु परम पुरुषोत्तम, सबके सिरजण हार।
"शान्तिबाई" शरण सुखदाई, करिये भव से पार ॥४॥

भजन (२३) राग आसावरी पद

अवगुण मेरा माफ करो गुरुदाता।
दया बक्साओ पार लगाओ, आर्त अरज सुनाता ।टेर॥
किया गुनाह मैं तो अनन्त अपार, ज्यारा अन्त न आता।
अरब खरब कोटि कल्प असंख्य, गिनत गिनत थक जाता ॥१॥
क्या कहुं मुख कहा ना जावे, कहने से शरमाता।
भयो अति नीच कीच माहीं लपट्यो, टूट्या नाम से नाता ॥२॥
हो मजबूर सूअर ज्यूं भटक्यो, फिर फिर बहु दुःख पाता।
कीजे मुक्त जुगत से स्वामी, और कछु न चाहता ॥३॥
अनन्त जन्म की बिगड़ी आखिर, आप सुधारो ज्ञाता।
आप समान दयाल जगत में, और नजर ना आता ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूरा, जानु विश्व विख्याता।
कहे "शान्ति" भेद ना रंचक, स्वयं है गुरु विधाता ॥५॥

भजन (२४) राग आसावरी पद गाने का

सुनो सखी ! आज स्वप्न की बात।
क्या कहूँ कछु कहा नहीं जावे, मन मन ही शरमात ।टेर॥
साँझ भई सुख नैणा निन्दिया, बन्दी आंख खुल जात।
श्याम हमारे प्राण पियारे, खेल रही सारी रात ॥१॥

अनन्त रवि सम छवि पिया की, निरखत नहीं अघात।
सुरत निराली अति मतवाली, हृदय रहे समात॥२॥
श्याम मिले से महफिल पाया, शिशु जन्मा नवजात।
हुलर हुलर हुलरावे प्रीतम, देख देख हरसात॥३॥
सनमुख श्याम काम सब पूर्ण, अब ना विरह सतात।
प्रीतम मिलिया अन्तर खुलिया, घाल मिली गलबांथ॥४॥
"रामप्रकाश" सतगुरु हमारे, पकड़ लियो निज हाथ।
"शान्ति" अन्तर पाय लिया प्रीतम, स्वयं श्री रघुनाथ॥५॥

भजन (२५) राग आसावरी पद गाने का

सतगुरु इस विधि मोहि परणाई।
खर्चा ना दाम काम सब पूर्ण, पलेहूं लगी नहीं पाई।टेर॥
लागो भाव चाव उर अन्दर, विरह की बान बैठाई।
मौली मूल कबूल कर बांधी, प्रीति पाट पूराई॥१॥
रोली रमझ समझ कर धोली, तत्त्व तिलक लगाई।
चेतन चिटियो लीयो हाथ में, प्रेम पीठी मसलाई॥२॥
निरमल अंग भयो शुद्ध शीतल, महरम मेहन्दी रचाई।
विवेक बनोरा जीमण लागी, कमी राखी ना काई॥३॥
ज्ञान वैराग बरी में पहनी, करुणा कोर जड़ाई।
श्रवण मनन निदिध्यासन करके, थिरता थाम रुपाई॥४॥
चित्त की चंवरी मांहि चोहटे, विप्र विचार बुलाइ।
ब्रह्म बींद संग कियो फेसलो, बेफिकरी फेरा खाई॥५॥
सत समटूणी सीख ली पूरी, लेवत ना पछुताई।
गुरुगम गाडा भरिया ठाडा, दिन दिन बढत सुहाई॥६॥

पहर ओड़ में गई सासरे, पीहर परे छिटकाई।
सासरिये को लोग सुहानो, सो मेरे मन भाई ॥७॥
ससुर मेरो परम सुज्ञानी, समता सासु पाई।
देवर जेठ मेरा बड़ा दयालु, भोली नणदल बाई ॥८॥
देराण्या जेठाण्या मिली चाव से, करती केवल हथाई।
निशिदिन नेह नाम से लाग्यो, सतगुरु सेन बताई ॥९॥
अक्षय महल अमर वर पायो, सुन्दर सैज बिछाई।
पिव प्यारी की भई एकता, अरस परस इकराई ॥१०॥
प्रीतम प्यारी पलक नहीं न्यारी, पल क्षण भूले नाई।
"शान्तिबाई" मिटी दुःखदाई, हरष हरष गुण गाई ॥११॥

भजन (२६) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां मैं शरणागत थारी।
होय निचिन्त प्रीत पर छोड़ी, समता सबूरी धारी ।टेर॥
धारी सबूरी गई मजबूरी, पूरी मिटी लाचारी।
होय निरबन्धन फन्द सब हटियो, दी आजादी भारी ॥१॥
मन को मार प्यार कियो पिया से, सुरत सुहागन प्यारी।
सुरत शब्द मिल भई एकता, पलक होवे ना न्यारी ॥२॥
श्याम से मिलिया अन्तर खिलिया, मिट गई दुतिया सारी।
आठों याम श्याम संग खेलूं, लगी पिया से यारी ॥३॥
श्याम संग राची बण रहीं आछी, जाची दुनिया दारी।
भई दीवानी दिलवर जानी, महिमा अगम अपारी ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु अधम उद्धारण, धर आया अवतारी।
"शान्ति" शरण प्रण प्रतिज्ञा, यह निज निष्ठा हमारी ॥५॥

भजन (२७) राग आसावरी पद गाने का

सखी मेरो ! पियो है अलबेलो।
ना घरबारी नहीं ब्रह्मचारी, ना न्यारो ना भेलो।।टेर।।
रूप न रंग अंग ना वाके, ना उजलो ना मेलो।
जाति वर्ण आश्रम ना कोई, नाम गांव बिन रहेलो।।१।।
ज्ञाता न ज्ञान ज्ञय ना कोई, ना गूंगो ना गेहलो।
ध्याता ध्यान ध्ये ना उनके, ना गुरु ना चेलो।।२।।
कारण करण नहीं वो करता, ना कोई संग अकेलो।
दर्शन दृश्य दृष्टा जहाँ नाहीं, ना बूढो ना छेलो।।३।।
शब्दातीत प्रतीत है प्रीतम, पग बिन पंथ दुहेलो।
निकट ना दूर भरपूर जगत में, आपो ही आप लखेलो।।४।।
"रामप्रकाश" गुरु अगम अगोचर, ना प्रकट गुपतेलो।
सच्चिदानन्द आनन्द निज के बल, "शान्ति" दे रही हेलो।।५।।

भजन (२८) राग आसावरी टोडी पद

अवगुण मेरा माफ करो गुरु सांई।
आप अपार दातार दयालु, मैं हूँ तुम शरणाई।।टेर।।
मैं हूँ अज्ञानी कछु नहीं जानी, फंसी जाल के मांई।
हो बेअकल नकल संग नाची, संभल सकी मैं नाई।।१।।
थी मैं सिंह स्याल ने पकड़ी, भेड़ समझ कर खाई।
निज के भूल धूल बहु खाई, शुद्ध स्वरूप विसराई।।२।।
पावन मौका हो गया धोका, हाथों दिया गमाई।
बड़ी पछताऊँ कहत शरमाऊं, सही बहुत दुःखदाई।।३।।
"रामप्रकाश" गुरु परम दयालू, अरज सुनो रघुराई।
"शान्तिदासी" अति उदासी, चरण छोड़ ना जाई।।४।।

श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वारस्थ सन्तदासोत गूदड़ गद्दी जोधपुर पीठाधिश्वर अनेक आध्यात्मिक धर्म साहित्य ग्रन्थों के रचयिता

तत्वज्ञ श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्री उत्तम आश्रम, कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर - 342006 ✆ 54702४

Scanned by CamScanner

श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वारस्थ सन्तदासोत गूदड़ गद्दी जोधपुर पीठाधिश्वर

अनेक आध्यात्मिक धर्म साहित्य ग्रन्थों के रचयिता

तत्वज्ञ श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्री उत्तम आश्रम, कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर - 342006 ✆ 547024

भजन (२९) राग आसावरी टोडी पद

सतगुरु भजन करूं कि ड्यूटी।
दयावर आप बताओ दाता, कब होसी आ छूटी।।टेर।।
दोनों बीच उलझकर उत्फी, मेरी आत्मा रूठी।
क्या मैं करूं कोई ना निर्णय, म्हारे हिये की फूटी।।१।।
घर परिवार संसार चक्कर में, गेर घणी घणी चूटी।
अपना स्वार्थ सिद्ध करने को, बड़ी खाल मिल कूटी।।२।।
घणो कमायो घणोई गमायो, पास ना कोडी फूटी।
अति दुःख पाओ खूब पछताऊं, आखिर खुली मूठी।।३।।
किसे सुणाऊं कोई ना मेरा, दुनिया सारी झूठी।
दीन दयाल ख्याल करो मेरा, जाय जिन्दगी खूटी।।४।।
हो गई तंग संग इन सबके, सुरता चले अफूटी।
लागे ना जीव बड़ो घबरावे, आस जीणे की टूटी।।५।।
आन जिलाओ प्राण बचाओ, ला संजीवन बूटी।
घोट पिलाय जि लाय मृतक को, देय अमर निज घूटी।।६।।
"रामप्रकाश" गुरु परम कृपालु, कृपा करो अनूठी।
गुरु प्रताप साफ़ शुद्ध "शान्ति", मोह नींद से ऊठी।।७।।

भजन (३०) राग आसावरी पद गाने का

जिज्ञासा बिना होवे ना ब्रह्मज्ञान।
यह संसार सार नहीं समझे, छायो उर अज्ञान।।टेर।।
कभी ना आवे सतसंग में, शब्द सुने ना कान।
कुकर्म करत अघात जाल ना, यह पामर पहचान।।१।।

तीरथ व्रत अरु शुभ कर्मों में, घणोई लुटावे दान।
अशुभ वासना खेद ना समझे, सोई विषयी जान ॥२ ॥
जीव ब्रह्म को भेद मिटावे, पूछत आत्म ज्ञान।
सामर्थ गुरु की रहत शरण में, वो जिज्ञासु जान ॥३ ॥
ब्रह्म विचारे और ना धारे, सब में एक समान।
जल कमलवत रहत जगत में, सो ज्ञानी मस्तान ॥४ ॥
जन्तर मन्तर तन्तर सिद्धायां, खूब होवे परेशान।
शुद्ध स्वरूप लखे नहीं जब तक, मिटे ना खैंचा तान ॥५ ॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ दाता, पूर्ण दया निधान।
''शान्ति'' कहै सतगुरु की शोभा, क्या मुख करूं बखान ॥६ ॥

भजन (३१) राग आसावरी पद गाने का

शोभा मेरे गुरुदेव की भारी।
अगम अपार अथाह अपरबल, छवि अनुपम प्यारी ।टेर ॥
शेष गणेश महेश्वर गावत, आयेड़ा अवतारी।
योगी मती सती सन्यासी, बड़ा बड़ा तपधारी ॥१ ॥
सन्त अनन्त हो गया जग मांहि, श्रीमुख कहत मुरारी।
नेति नेति कह सब थाक्या, अगम निगम जब सारी ॥२ ॥
वेद कतेक उपनिषद् गीता, कर सतसंग प्रचारी।
षट् शास्त्र व्याकरणादि, कवि कोविद कथ हारी ॥३ ॥
सतगुरुदेव दातार जबर है, हीरा के व्यापारी।
शरणे आवे मौज उड़ावे, कमी रहे ना क्यांरी ॥४ ॥
''रामप्रकाश'' गुरु सकल शिरोमणि, पूर्ण परउपकारी।
''शान्ति'' कहै सतगुरु की शोभा, लखन भखन से न्यारी बारी ॥५ ॥

भजन (३२) राग आसावरी पद

साधो भाई ! गुरुजी मेरे ब्रह्मज्ञानी।
ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ वैरागी, ब्रह्मरूप विद्वानी ॥टेर॥
ब्रह्म विचारे भरम विडारे, तारे जीव अज्ञानी।
दे निज सेन बैन यथार्थ, मेटे खैंचातानी ॥१॥
मिथ्या असार विकार अनात्म, दुतिया दूर मिटानी।
ईश्वर जीव शीव सत आतम, भिन्न भिन्न कर समझानी ॥२॥
षट उर्मी पंच भेद रु भ्रान्ति, सही सही सुलझानी।
एको एक केवल चितात्म, आपो आप लखानी ॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु अगम अगोचर, पहुँचे ना मन वानी।
"शान्ति" पाया गुरुदेव दया से, निर्मल पद निरवानी ॥४॥

भजन (३३) राग आसावरी, टोडी पद

मिलिया म्हानें सतगुरु दीन दयाल।
दीन दयाल महा उपकारी, शोभा परम विशाल ॥टेर॥
मैं गुणहीन दीन खल दुरबल, नीच कुटिल कंगाल।
कृपा करि करुणा के सागर, कर दियो मालो माल ॥१॥
सत समझाई दुविधा मिटाई अपनाई लख हाल।
भुजा पसार उभार दयालु, पूर्ण करी सम्भाल ॥२॥
भव दुःख पाती गोता खाती, लख चौरासी जाल।
पर उपकारी गुरु अवतारी, डूबत लीवी निकाल ॥३॥
स्वरूप लखायो भरम मिटायो, आयो अपरोक्ष ख्याल।
ब्रह्म विचार सार चिदात्म, मिटियो सारो जंजाल ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ मिलिया, पूर्ण कर प्रीतिपाल।
सौच हमारा "शान्ति" सारा, दिया चरण में डाल ॥५॥

भजन (३४) राग आसावरी पद गाने का

भक्त को क्यों सतावे भगवान।
भक्त दुःखियारो भजन तिहारो, छोड़ा देवेलो नादान।।टेर।।
भक्ति भंग पड़े भक्तों के, घणों होवे नुकसान।
जगत भक्त की निन्दा करले, सहा ना जाय अपमान।।१।।
भक्त सतावे नहीं गुण गावे, कौन करे तेरो ध्यान।
कहीं भक्त न पाये तेरी ऊत जाये, भक्त तेरी सन्तान।।२।।
खड़ा पुकारे आप के द्वारे, दयावर देओ वरदान।
संकट निवारो दास उभारो, अरज सुणो श्री मान।।३।।
"रामप्रकाश" सतगुरु से हरि की, शोभा सुणी महान।
"शान्तिप्रकाश" आस करो पूर्ण, दास आपणो जान।।४।।

भजन (३५) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसा ! अबके मौज बणाई।
आरत जान उधार कियो मेरो, करली अरज सुणाई।।टेर।।
लख चौरासी भटकत-भटकत, बहुत घणी दुःखपाई।
दे सत सार पार करी भव से, आवागमन मिटाई।।१।।
आत्म अनात्म जीव ईश का, भेद छेद बतलाई।
मिथ्या असार विसार सब प्रपंच, भिन्न भिन्न कर समझाई।।२।।
आपा भूल अनात्म को ध्यावत, खावत जूत घणाई।
अन्ध विश्वास नाश कर उर से, दुतिया दूर हटाई।।३।।
विधि विधान ज्ञान दे उत्तम, सांची सेन लखाई।
सत चित्त आनन्द पूर्ण निज चेतन, साक्षी स्वयं बताई।।४।।
"रामप्रकाश" गुरु परम दयालु, शोभा कही ना जाई।
"शान्तिदास" पर कृपा कीनी, कसर रही ना काई।।५।।

भजन (३६) राग आसावरी पद गाने का

पायो मैं तो ! गुरु कृपा प्रसाद।
कृपा भई गई सब दुविधा, मिले विवेकी साध।।टेर।।
दीनदयाल मिले गुणसागर, माफ किया अपराध।
तिमिर मिटाय लखाय चिदात्म, भरी ज्ञान की लाद।।१।।
दे अभय ज्ञान गुंज गाढी, सोहं सुणाई नाद।
उड़िया भ्रम उघड़ गई अंखियाँ, दूर किया प्रमाद।।२।।
क्या गुण गाऊं पार ना पाऊं, गुरुगम रमझ अज्ञाद।
पावे भेद वेद षट् शास्त्र, वरणित सन्त अनाद।।३।।
शोभा सुण सकल आवे शरणे, लाखो की तादाद।
शरणे आवे सोई सुख पावे, मिटे सारी कुचमाद।।४।।
''रामप्रकाश'' गुरु विष्णु महेश्वर, ''शान्ति'' शिष्य प्रह्लाद।
प्रण प्रतिज्ञा पूर्ण गुरु शिष्य की, अमर रहे मरियाद।।५।।

भजन (३७) राग आसावरी पद गाने का

होयो म्हानें गुरु प्रताप विवेक।
मैं मति मन्द अन्ध अज्ञानी, दया करि दुःखि देख।।टेर।।
जान अनाथ नाथ मोहि तारो, हाथ दिया सिर टेक।
अपना लख उभार लो डूबत, मेटी करमन रेख।।१।।
कर्म भ्रम अरु द्वैत वासना, सारी दूर दी फेंक।
शुद्ध स्वरूप अरूप अनुपम, पाया पूरबला लेख।।२।।
संचित क्रियमाण प्रारब्ध सब, ब्रह्म अग्नि लिया सेक।
भूना बीज अंकुर ना ऊपजे, करो उपाय अनेक।।३।।
गुरु ''रामप्रकाश'' समर्थ शुद्ध चेतन, सो लाखो में नेक।
''शान्तिदास'' करोड़ों में नाहीं, अरबां खरबां में एक।।४।।

भजन (३८) राग आसावरी पद गाने का

मन रे ! मान जरा कुछ कैना।
बार बार तोहि समझाऊं, समझ गुरुगम सैना।।टेर।।
यह संसार स्वप्न की माया, यहाँ तो थिर ना रेना।
अब तूँ जाग लाग सुमिरण में, तृष्णा त्याग कर देना।।१।।
जब तक तू जग रच मच रेसी, पावे नहीं सुख चैना।
कर निस्तार विचार दमोदम, निरख निजात्म नैना।।२।।
जो चाहे कल्याण तिहारो, गुरु चरणों में रैना।
बिन गुरु ज्ञान ध्यान ना मुक्ति, साँची कहुँ सुण लैना।।३।।
"रामप्रकाश" परम पुरुषोत्तम, रंच फर्क कछु है ना।
कहै "शान्ति" शरण समर्थ के, सत्य मार्ग में वेहना।।४।।

भजन (३९) राग गजल पद गाने का

ऊभो पुकारे दास दयाल एकलो।
सुनो विनय फरियाद दयालू, दयाकर मुझको देखलो।।टेर।।
लख चौरासी भटकत भटकत, बहुत घणा दुःख पाया हूँ।
सुना बड़ा कृपाल आपको, शरण तिहारी आया हूँ।
दयानिधान जान शिष्य अपना, कर मस्तक पर टेकलो।।१।।
यह संसार बना दुःखालय, नहीं जीने का चारा है।
तुम बिना मेरा कौन सहायक, चरणों का सहारा है।
दे उपदेश पार करो भव से, संकट मोरे सेकलो।।२।।
दया करो दातार दया मई मैं, दर्शन की प्यासी हूँ।
व्याकुल नैन न चैन रैन दिन, रहता सदा उदासी हूँ।
पावन चरण शरण मैं तेरी, अपनालो चाहे फेंकलो।।३।।

ले अवतार अनन्त ही तार्या, अधमी जीव उद्धारा हो।
शरण आवे मोक्ष फल पावे, दानी बड़े दातारा हो।
महिमा अपारा कथ कथ हारा, वेद ग्रन्थ सन्त पेखलो ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरुदेव पुरुषोत्तम, साक्षी सिरजन हारा है।
दोऊ कर जोड़ अरज वन्दना, "शान्ति" दास तुम्हारा है।
गुरु गुण गाऊं शीश नमाऊं, भोला भक्त हूँ नेकलो ॥५॥

भजन (४०) राग आसावरी पद गाने का

माने ना मेरो मनवो बड़ो हरामी।
मनवो बड़ो हरामी माने ना, मनवो बड़ा हरामी।।टेर॥
भोगों में ओ फिरे भटकतो, करतो जगत गुलामी।
भयो दीन आधीन हीन ओ, निलज्ज बड़ो निकामी॥१॥
सब जख़्मों को जनक बन बैठो, तुम ही ममता जामी।
धारी अनीती होवे फजीती, विषयों में ले बदनामी॥२॥
शुभ अशुभ कर्म शर्म करेना, चोर लुंटेरो नामी।
विपर्य्यत व्यवहार आचार विचार ना, बड़ो क्रोधी कामी॥३॥
हो गई तंग संग इस मन के, नित नई समस्या सामी।
कहां जाऊं कैसे गेल छुड़ाऊं, भरी ना जाय सलामी॥४॥
"रामप्रकाश" सतगुरु पुरुषोत्तम, आ अरजी अन्तरयामी।
"शान्तिशरण" दया कर दीजे, सतगुरु देव नमामी॥५॥

भजन (४१) राग आसावरी पद गाने का

अज्ञानी मन सतगुरु शरणे आय।
शरण आवे दर्शन पावे, ताके कमी रहे कोई नाय।।टेर॥
सतगुरु चरण है गंगा गोमति, जामे मल मल न्हाय।
जन्म जन्म की द्वैत वासना, पल में पाप नसाय॥१॥

सतगुरु चरण चन्दन मलियागीरी, निशिदिन रहे लपटाय।
अपनी सुगन्ध तेरे में बक्से, भेद अभेद मिटाय॥२॥
सतगुरु चरण कल्पवृक्ष चिन्तामणि, चिंत्तवन ध्यान लगाय।
सर्व भोग योग अरु मुक्ति , मन चिन्तित फल पाय॥३॥
सांची कहुँ मान मेरा मनवा, रमझ समझ थिर थाय।
मूर्ख चेत हेत कर हरि से, प्रपंच परे हटाय॥४॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम दयालू, जिन से प्रीत लगाय।
''शान्ति'' ज्ञान गुरु से लीजे, जन्म मरण मिट जाय॥५॥

भजन (४२) राग आसावरी पद गाने का

गुरुजी ! माफ करो शिष्य थारो।
दया करो दातार दयालु, मानुष जन्म सुधारो।टेर॥
जन्म जन्म से बिछूड़्यो भटकूं, अति हूँ अवगुण गारो।
बड़ो मैं नीच कीच में लिपट्यो, आदत को लाचारो॥१॥
आप अपार दया के सिन्धु, करुणा दृष्टि डारो।
भलो बुरो देखों ना दाता, अवगुण चित्त ना धारो॥२॥
महाविद्वान सुजान शिरोमणि, मैं कुकर्मी बारो।
गुंगो गेलो आखिर चेलो, अपनो जान उभारो॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, शोभा अगम अपारो।
पड़ी पुकारे ''शान्ति'' द्वारे, हेलो सुणो हमारो॥४॥

भजन (४३) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसा ! भीख मांगण को आई।
घालो भीख भिखारी थारो, मांगणहार कहाई।टेर॥

दो ओ दान दयालु दयावर, सन्मुख झोली फैलाई।
मुझसो दीन दातार ना तुमसो, इन जगत के माई॥१॥
जान अनाथ हाथ धरो सिरपे, आप चरण शरणाई।
तुम बिन मेरो कौन सहारो, चरण छोड़ कहां जाई॥२॥
अब पछताऊं कहत शरमाऊं, किया गुनाह घणाई।
अवगुण अनन्त अन्त ना आवे, माफ करो गुरु सांई॥३॥
आप अपार भण्डार ज्ञान के, शोभा सुण सवाई।
मीन नीर में रहे पियासी, कमी आप के कांई॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु मिले ब्रह्मवेत्ता, कीजे अर्ज सुणाई।
आरत होय पुकारे द्वारे, दासी "शान्ति" बाई॥५॥

भजन (४४) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां ! अरज करे थारी चेली।
अबला को उत्तर शुभ दीजे, प्राण त्याग कर देली॥टेर॥
घर परिवार छोड़ कर सारा, भागी आई अकेली।
बड़ी दुखियारी दासी तिहारी, राखो आप के भेली॥१॥
तेरे नाम की भई दिवानी, बात जगत में फेली।
थारी हूँ थारे ही अर्पण, पलक दूर नहीं रेली॥२॥
जैसी कैसी रैसी थारी, हूं गुंगी चाहे गेली।
मत विसराओ हिवड़े लगाओ, क्यों ललचाओं डेली॥३॥
यह संसार स्वार्थ का सारा, झूठा बन्धु बेली।
सोच विचार सार नहीं देखा, इन से यारी मेली॥४॥
परम पुरुषोत्तम महा अवतारी, डूबत नैया झेली।
"शान्तिबाई" गुरु शरणे आई, सुणो विनती पेली॥५॥

भजन (४५) राग आसावरी पद गाने का

शोभा मेरे श्याम धनी की गाओ।
दिन दिन दूनी रात चौगुनी, पल पल प्रीत लगाओ।।टेर।।
श्याम धणी मेरा सामर्थ पूरा, सब जग शरणे आओ।
महा कृपाल निहाल करें पल में, मालो माल हो जाओ।।१।।
जो चाहो कल्याण जीव को, केवल श्याम मनाओ।
धर उर नेम प्रेम कर पूर्ण, भवसागर तरजाओ।।२।।
साधन सार विसार दे प्रपंच, दुरमति दूर हटाओ।
अपना आप लखावे अन्दर, बाहिर क्यों भटकाओ।।३।।
'रामप्रकाश'' गुरु परम दयालु, संशय खोल बताओ।
''शान्ति'' सफल होवे संजीवन, नित उठ शीश नमाओ।।४।।

भजन (४६) राग आसावरी पद गाने का

बात निज सतगुरु जी से होई।
प्रकट्या पुण्य पूरबला आछा, आय घर मिलिया मोई।।टेर।।
खोजत फिरी खलक में खण्डा, ब्रह्मण्ड लीयो जोई।
कर कर याद फरियाद श्याम से, बहुत घणा दिन रोई।।१।।
किया प्रयत्न उपाय अनेकों, और घणो अनुभोई।
हो गये सफल श्याम घर आये, निष्फल गयो कतोई।।२।।
लागी प्रीत पूर्ण प्रीतम से, दुई दूर परे धोई।
होय मगन श्याम संग खेलूं, सूरत चरण में पोई।।३।।
''रामप्रकाश'' गुरु कृपा करके, श्याम मिलायो मोई।
''शान्तिशरण'' भई अब निर्भय, झक मारो सब कोई।।४।।

भजन (४७) राग आसावरी पद गाने का

अब मेरो ! श्याम धणी होयो राजी।
दया करी गुरुदेव दयालु, मिली ज़िन्दगी ताजी।।टेर।।
श्याम विमुख बड़ी दुःख पाई, जब तक रही नाराजी।
सन्मुख मिलिया अन्तर खिलिया, मोद मेरे मन मांजी।।१।।
मात तात कुटुम्ब सुत बन्धु, रूठो पण्डित काजी।
अब ना प्रवाह करूं किसी की, कोई सामने आजी।।२।।
बीती बात विसारी सारी, गयो समय वृथाजी।
हो निरभाग राग करे विषयन, त्याग दाग देह दाजी।।३।।
प्राण जाय प्रतिज्ञा पूर्ण, पलट सकूं कभी नाजी।
लागी प्रीत प्रेम प्रीतम से, जीती जन्म की बाजी।।४।।
मेरे श्याम को जाने कोईक, मिले सन्त विरलाजी।
"शान्तिदास" श्याम की शोभा, दसों दिशा में छाजी।।५।।

भजन (४८) राग आसावरी पद गाने का

अब मैं एक देवता ध्याऊं।
जने जने की मिटी भावना, सतगुरु देव मनाऊँ।।टेर।।
मोटा देव मिल्या घट भीतर, बाहर ना भटकाऊँ।
तन मन धन हित चित्त से चाकर, नित उठ शीश नमाऊँ।।१।।
साचो श्याम भयो है सन्मुख, क्यों कूड़ों के जाऊँ।
कुड़ा देव कपट से भरिया, अभी नहीं मुँहु लगाऊँ।।२।।
ले निज ओट खोट सब काढ्यो, चेतन चोट चढ़ाऊँ।
हो शुद्ध साफ शरण भई अर्पण, देख देव हरसाऊं।।३।।

अचल आरती रोज उतारूं, जग मग जोत जगाऊं।
नियम नारेल लियो कर निश्चय, प्रेम पुष्प बरसाऊं॥४॥
पल पल श्वास श्वास में सिमरूं, क्षण भर ना विसराऊँ।
असली पाय नकल से नफरत, साची कह सुणाऊं॥५॥
''रामप्रकाश'' गुरुदेव शिरोमणि, सारी खोल बताऊँ।
सांचा देव जब्र सकलाई, ''शान्ति'' कीर्ति गाऊँ॥६॥

भजन (४९) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! ऐसा देव हमारा।
सतगुरु देव देवरो देही, जिन का प्रेम पुजारा।टेर॥
गुरु महाराज सरताज शिरोमणि, सबके सिरजणहारा।
व्याप रहे जग अन्तर बाहिर, जानत नहीं संसारा॥१॥
मेरा देव दातार जबर है, पूर्ण है पतियारा।
विधी विधायक अति वरदायक, सब जग पालनहारा॥२॥
धर कोई आस विश्वास कर आवे, त्रास मिटावन हारा।
आसा पूर्ण सामर्थ गुरु स्वामी, सब गति जाननहारा॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु चेतन देवा, मेरा प्राण आधारा।
''शान्तिप्रकाश'' की अरजी देवा, चरणन दास तिहारा॥४॥

भजन (५०) राग आसावरी पद गाने का

रावल जोगी ! अबतो दरश दिखादे।
क्यों नहीं आवे यूं ही विलमावे, सांची बात बता दे।टेर॥
तड़फत प्राण पुकारूं पल पल, अपरबल प्यास बुझादे।
निकसत जान मान मजबूरी, डूबत आन बचादे॥१॥
आसा तृष्णा बड़ी बीमारी, दयावर दवा दिलादे।
सुणो आवाज महाराज आरत की, मृतक मोहि जिलादे॥२॥

बड़ी बेचैन विरह मैं व्याकुल, सत की टेर सुनादे।
दे निज ज्ञान ध्यान कर अपना, चरणन दास बनादे॥३॥
कर उपकार तार भव सिन्धु, जग से गेल छुड़ादे।
करूं पुकार दातार के द्वारे, चरण शरण लिपटादे॥४॥
परम श्याम से अर्ज गुजारू, प्याला प्रेम पिलादे।
"शान्तिदासी" दर्शन प्यासी, शुद्ध स्वरूप लखादे॥५॥

भजन (५१) राग आसावरी पद गाने का

गुरुजी ! धाम थारी अति दूर।
कायर काची ताक परेहो, वहाँ पहुँचे विरला शूर।।टेर॥
कामी क्रोधी लोभी अज्ञानी, उसका क्या मजदूर।
ज्ञानी ध्यानी श्रोता वक्ता, पहुँचे वक्त जरूर॥१॥
राम धाम का मार्ग बिहुणा, घाटी विकट करूर।
पग बिन पन्थ पंख बिन उड़यो, महरम परम मसूर॥२॥
न कोई सेन नैन बिन निरखे, निश्चल निरमल नूर।
बेगम भोम ॐ अक्षर ना, नहीं देव दस्तूर॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु धाम निवासी, दया करी भरपूर।
"शान्ति" धाम ओलखी आदू, मेट्यो फिकर फितूर॥४॥

भजन (५२) राग आसावरी पद गाने का

धाम कोई विरला पहुँचे भाई।
पहुँचे धाम काम सब पूर्ण, कमी रहे ना काई।।टेर॥
त्याग वैराग गुरुगम गाढा, साधन श्रद्धा लाई।
विषय विकार जार वासना, फिरता बे फिकराई॥१॥
अन्तर ध्यान एकसो लागो, वार वार चित्त लाई।
लागी एक ब्रह्म से डोरी, अखण्ड समाधि थाई॥२॥

जग को जीत रहे जग मांही, कनक कामिनी नाई।
जीवत मरे हरे अघ अविद्या, वे ही महान मुनिराई ॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु कृपा करके, मेटी सारी दुःखदाई।
"शान्ति" कहै गुरुदेव हमारे, अजब फकीरी आई ॥४॥

भजन (५३) राग आसावरी पद गाने का

सतगुरु ! आप हो अमर अखण्डा।
आदि अन्त मध्य तीन काल में, लहरे आपका झण्डा ।टेर॥
अक्षय अपार विचार ब्रह्मात्म, अथाह थाह नहीं खण्डा।
अजय अडोल गोल नहीं गुप्ता, अविगत अकथ अबण्डा ॥१॥
दृश्य अदृश्य विषय ना बस्ती, न मण्डप ना मण्डा।
ज्ञान विज्ञान ध्यान ना ध्याता, ना पूजा ना पण्डा ॥२॥
धरण गगन पवन ना पावक, ना शीतल ना ठण्डा।
बन्ध फन्द मन्द ना ममता, ना देवल ना दण्डा ॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु अगम अगोचर, व्यापक खण्ड ब्रह्मण्डा।
भ्रम न कर्म भेद ना भ्रान्ति, "शान्ति" रमझ न रण्डा ॥४॥

भजन (५४) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! मैं हूँ अनन्त अक्रिय।
क्रिया कर्म लागे नहीं मेरे, नहीं उपासना उरिये ।टेर॥
पाँच तत्त्व त्रिगुण ना मेरे, चार सात से परिये।
दुतिया लेस कलेश न कोई, देस वेष ना करिये ॥१॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति नाही, ना मेरे में तुरिये।
उत्पत्ति प्रलय लय विक्षेप ना, वार वतन ना बरिये ॥२॥
मुझ में रैन दिवस ना तारा, ना शशी ना सूरिये।
काया माया धूप ना छाया, ना जन्मूँ ना मरिये ॥३॥

''रामप्रकाश'' गुरु अमर अनादि, व्यापक चर अचरिये।
बन्ध न फन्द छन्द मन्द नाहीं, ''शान्ति'' अजर अमरिये ॥४ ॥

भजन (५५) राग आसावरी पद गाने का

कब गुरु देव मेरे घर आवे।
तलफत रेन दिवस पल पल में, नैन चैन ना आवे ।।टेर ॥
तरसे तन मन तालामेली, श्वास कल्प सम जावे।
देख आतुरता दया विचारो, मस्तक आन जिलावे ॥१ ॥
है कोई ऐसा परम सनेही, जाय सन्देश सुनावे।
ओ उपकार जीवन नहिं भूलूं, मोहि गुरु श्याम मिलावे ॥२ ॥
देव ना दूजा पाठ न पूजा, इष्ट गुरु मन भावे।
राम रहीम हरि गुरु परमेश्वर, वही निज श्याम कहलावे ॥३ ॥
उन दिन की ऐसी बाटूं बधाई, आवत मोहिं बतावे।
हरष हरष देऊं मन भर भर, जी चाहे ले जावे ॥४ ॥
''रामप्रकाश'' गुरु अरजी सुनिये, जल्दी दरश दिखावे।
दासी उदासी पुकारे ''शान्ति'', कोयल ज्यों कुरलावे ॥५ ॥

भजन (५६) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! ऐसा देव कौन ध्यावे ?
सिमर्‌यां संकट सामने दीखे, पूज्यों से पत जावे ।।टेर॥
लिया ओट सोट पडे सिर में, कष्ट घणेरो आवे।
कियों दीदार बैकार जमारो, कने रह्यां कलंक लगावे ॥१ ॥
गावां रोवां तो मरजी म्हारी, वो ना बोले बतलावे।
ना कोई मान आसान भरोसा, वांरा गीत कौन गावे ॥२ ॥
भोगां खातिर फिरे भटकता, माल पराया चावे।
जाल फैलाय फँसाय जीवों को, अपनी तान बैठावे ॥३ ॥

नफरत भई नकली देवों से, म्हारे मन नहीं भावे।
असली पाय नकल क्यों पूजूँ, कुण यों समय गमावे ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरुदेव शिरोमणि, सारी पोल उड़ावे।
"शान्ति" शरण पाई सामर्थ की, उनसे गैल छुड़ावे ॥५॥

भजन (५७) राग आसावरी पद गाने का

सन्तों ! समदृष्टि कर देखो।
दुतिया दूर निवारो उर से, कपट काट परे फेंको ।।टेर॥
धर अवतार आविया जग में, जीव पार करने को।
माया मांहि मरे मतिहीना, फिरे पेट भरने को ॥१॥
जग भरमाओ जीव सताओ, क्यों लियो झूठ को ठेको।
स्वार्थ हित सांच नहीं बोलो, मान मर्यादा छेको ॥२॥
अकर्म कर्म अन्याय अनीति, शर्म नहीं कही केको।
भेद विहुंणा फिरो भटकता, बिन बतलाया बेहको ॥३॥
ज्ञान न ध्यान नहीं शुभ करणी, अवगुण भरे अनेको।
हरि गुरु हेत दया नहीं हृदय, सद्गुण मिले ना ऐको ॥४॥
कहणी रहणी में अति आन्तरो, म्हैं उपकारी थाको।
माल मुफ्त को खाय मुल्क में, क्यों जीवाने सेको ॥५॥
"रामप्रकाश" गुरु परम दयालु, आय चरण शिर टेको।
"शान्ति" कहै इन कूड़ साँच को, राम लेवेलो लेखो ॥६॥

भजन (५८) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! मैं सत ब्रह्म अपारा।
अद्वय अमल अचल अविनासी, सब का सिरजण हारा ॥टेर॥
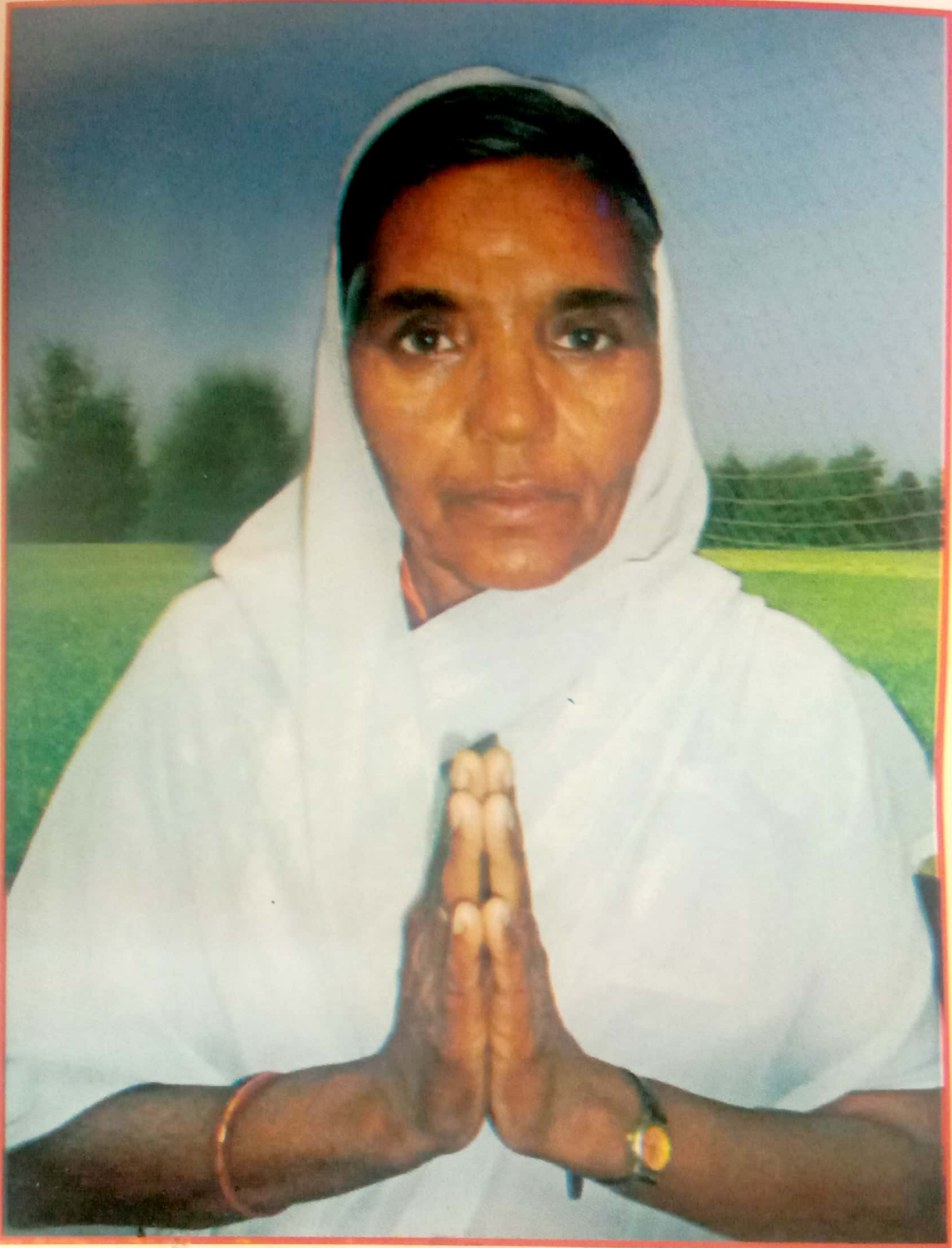
श्री शान्ति भजन दीपिका की रचयिता

श्री मत्विदुषा शान्तिबाई वैष्णव

रेल्वे स्टेशन के सामने, बाड़ी, राजलदेसर (चुरू)
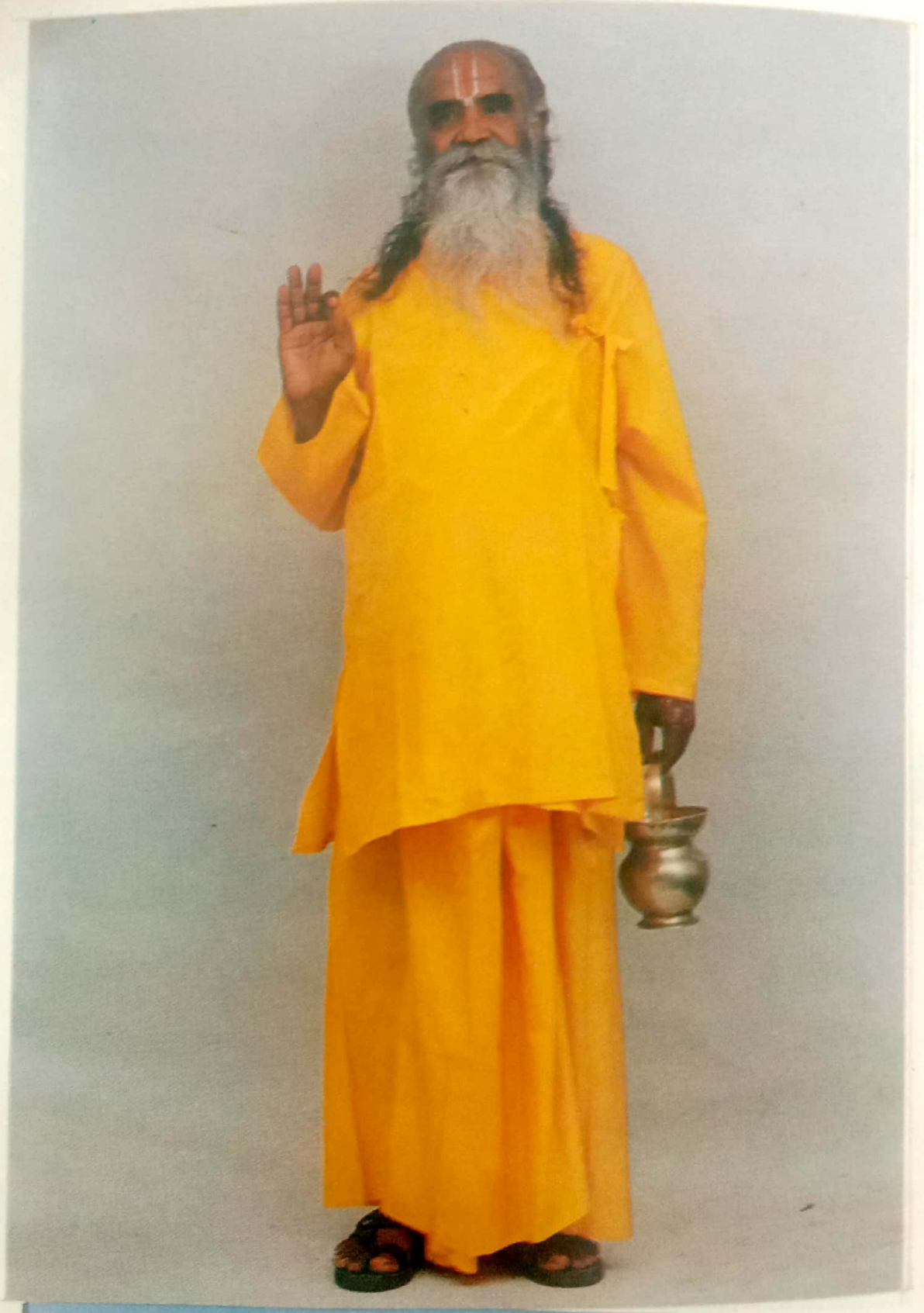
पूज्यपाद स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "वैरागी"

श्री महन्त–उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर–6
फैक्स / दूरभाष 0291 – 2547024

एक अखण्ड अनामी अदृश्य, अविगत अज अविकारा।
ज्ञान विज्ञान अधिष्ठान जगत का, निर्बन्धन निरधारा॥१॥
जोग न भोग रोग नहीं व्यापे, ना हल्का नहीं भारा।
भेद अभेद खेद ना कोई, हर्ष शोक से न्यारा॥२॥
लेत न देत हेत ना किससे, ना मीठा ना खारा।
सबका संगी नित ही असंगी, जाने जाननहारा॥३॥
चारों वाणी नहीं चहुँ खाणी, जाणी मिथ्या असारा।
शेष अशेष विशेष ना कमती, लख न भखन से पारा॥४॥
''रामप्रकाश'' सर्व घट पूर्ण, आर पार इकसारा।
''शान्ति'' कहै स्वरूप अनुपम, निर्विकल्प निर्विकारा॥५॥

भजन (५९) राग आसावरी पद गाने का

अब मेरा ! अपने आप में बासा।
मरूं ना जन्मु, आऊं न जाऊं, नहीं हरष शोक का सांसा।टेर॥
सूक्ष्म स्थूल कारण कारज नहीं, नहीं प्रपंच अध्यासा।
त्रिगुण अवस्था नहीं कोई तुरिये, नाकोई धरण आकाशा॥१॥
गुरु गम पाई मिटी दुःखदाई, पुण्य पाप नहीं पासा।
सब दृश्य का द्रष्टा होके, देखूं जगत तमासा॥२॥
पांच क्लेश लेश ना रंचक, कर्म भ्रम नहीं भासा।
सारों का अधिष्ठान जान ब्रह्म, साक्षी स्वयं प्रकाशा॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु सब घट व्यापक, ना कमती ना कासा।
परम ''शान्ति'' भ्रातिसब भागी, ना कोई आस निरासा॥४॥

भजन (६०) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! मैं हूँ अमर अनादी।
आदि अन्त नहीं कोई मेरे, नहीं विघ्न ना व्याधी।टेर॥

आकाश वायु तेज जल पृथ्वी, रजो सतो तमो उपादी।
त्रिगुण अविद्या नहीं कोई माया, कारण करण इत्यादी ॥१॥
उत्पत्ति प्रलय नहीं कोई मेरे, ना बन्धन ना सादी।
शब्दातीत अक्षय निज चेतन, आवागमन उड़ादी ॥२॥
रज्जु में सीप नील नभ अन्दर, यूँ सीप में चांदी।
यूँ मेरे में सब कुछ कल्पित, मिथ्या जगत रचादी ॥३॥
अविगत अचल अटल अविनासी, सारा भ्रम विलादी।
अक्षय अपार सार सत चेतन, निश्चल नूर अनादी ॥४॥
आर पार इकसार हूँ सब में, गुरु गम धार समादी
"शान्ति" आप सदा अब निर्भय, बैठ गुरुगम गादी ॥५॥

भजन (६१) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! ऐसा निश्चल नूर।
मल विक्षेप आवरण नाहीं, सब काहू से दूर।।टेर॥
मन बुद्धि चित्त अहंकार चार यह, ज्ञान के हेतू जूर।
ब्रह्मज्ञान मुक्ति का हेतु, कर्म उपासना कूर॥१॥
निज मति बोध किया उर अन्दर, मन ममता गई मूर।
अहं ब्रह्म प्रत्यक्ष पहचाना, चित्त चंचलता चूर॥२॥
खण्ड ब्रह्मण्ड विभू जगपूर्ण, कणकण में भरपूर।
है ज्यों का त्यों पूर्ण थाया, अद्वैत असल अफूर॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ मिलिया, उडी भ्रम की धूर।
कहै "शान्ति" गुरुदेव दया से, हाजर पाया हजूर॥४॥

भजन (६२) राग पद गाने का

प्रभू बिना कौन सुने मेरे मन की।।टेर॥

यह संसार बनी स्वार्थ की, मोह फांसी बन्धन की।
नहीं सहायक बड़ी दुःखदायक, विषय मौत मरनकी ॥१॥
सुन के नाम काम सब छुटा, भूली सुध बुध मनकी।
छाया अन्धारा छिप गया तारा, आस मिटी जीवन की ॥२॥
नींद न चैन रैन ना चित्त में, सैन नहीं समझन की।
बिन हरि दर्शन तरस रहीं अंखिया, बदली बरसे सावन की ॥३॥
घायल की गति दर्दी जाने, और नहीं जानन की।
दिल का हाल जाने दिलवर ही, और सब कहन सुनन की ॥६॥
अति दुखियारी भई भिखियारी, भीख मांगू दर्शन की।
दो अभयदान सुजान शिरोमणि, झोली भरो निर्धन की ॥७॥
''रामप्रकाश'' गुरु दयावर, अरज सुणो विरहन की।
''शान्तिबाई'' शरण में आई, मैं दासी चरणन की ॥८॥

भजन (६३) राग आसावरी पद गाने का

माला म्हाने राम नाम की मिलगी।
आठों पहर अखण्ड धुन लागी, रोम रोम सारी हिलगी ॥टेर॥
समता सूत महरम का मणका, नेम प्रेम से पलगी।
पल पल घड़ी घड़ी नहीं भूलूं, श्वासो श्वास में झिलगी ॥१॥
माला फेर मस्त भयो मनवो, चित्त चंचलता चलगी।
श्रवण मनन सत्य उर धार्‌यो, द्वैत वासना जलगी ॥२॥
काम क्रोध लोभ मद वृत्ति, यह तृष्णा सारी गलगी।
सार विचार धार निज वृत्ति, ब्रह्माकर खिलगी ॥३॥
ॐकार में आप उचारे, सोहंकार से ढलगी।
निराकार साकार चराचर, रंरकार में रलगी ॥४॥

"रामप्रकाश" गुरु कृपा करी जब, काल जाल से टलगी।
कहै "शान्तिदास" गुरु दया से, मोह ममता गई अलगी ॥५॥

भजन (६४) राग आसावरी पद

फकीरी ! गुरु मेरे परम दातार।
परम दातार करुणा के सागर, शोभा अगम अपार ॥टेर॥
निराकार साकार प्रकट्या, दुखिया देख संसार।
तारण आया जीव जगाया, डूबत लिया उभार ॥१॥
दे सत सेन पार किया भव से, वेद ग्रन्थ निज सार।
तिमिर मिटाय स्वरूप लाखाया, मिटिया भ्रम अन्धार ॥२॥
दीन दयाल महा योगेश्वर, उत्तम सकल व्यवहार।
होय निशंक निरलिप्त निरन्तर, निष्कामी निरधार ॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु सन्त शिरोमणि, मेरे सिरजण हार।
"शान्ति" रमझ समझ कोई पावे, निश्चय हो निस्तार ॥४॥

भजन (६५) राग आसावरी पद गाने का

श्याम तेरा किसविधि दर्शन पाऊं।
हूँ मजबूर दूर अति तोसे, रो रो वक्त बिताऊं ॥टेर॥
दर्शन काज लाज तज जगकी, आज जोगण बन जाऊं।
होय वैरागन वन वन ढूंढू, सब जहाँ खोज लगाऊं ॥१॥
इश्क आग जगी उर अन्तर, तन मन खाख बनाऊं।
प्यार का पानी दे दिलजानी, जलती अगन बुझाऊं ॥२॥
आठों याम नाम रट तेरो, श्वासो श्वास जपाऊं।
कभी तो आसी श्याम अविनाशी, यूँकर जीव धपाऊं ॥३॥
करुं मैं रुदन बन्धन दुःखदायक, किस विध गैल छुड़ाऊं।
किस से कहुँ कोई ना म्हारो, जिस से मन बहलाऊं ॥४॥

जप तप नेम प्रेम कर पूजा, सब तीर्थों जा नहाऊं।
करूं घोर कठोर प्रतीक्षा, श्याम मिल्या घर आऊं॥५॥
जो कोई श्याम मिलादे मुझको, रात दिवस गुण गाऊं।
रहुँ चाकर के चाकर चरणां, नित उठ शीश निमाऊं॥६॥
होय भिखारी भीख तोसे मांगु, खाली हाथ ना जाऊं।
दर्शन भीख देओ गुरुदाता, और कछु ना चाऊं॥७॥
अति घायल व्याकुल बैचेनी, अन्न जल जरा ना खाऊं।
दिल का हाल जाने दिलवर ही, और कैसे बतलाऊं॥८॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम दयालू, सुणलो अरज सुणाऊं।
''शान्तिदासी'' दर्शन प्यासी, कहत बात शर्माऊं॥९॥

भजन (६६) राग आसावरी पद गाने का

सखी मोरी ! किस विधि धारूं मैं धीर।
उम्र जाये आये प्रीतम, कांई करुं मैं जीर॥टेर॥
करुं विलाप व्याकुल शुद्ध विसरी, निर्बल होयो शरीर।
छुट्या खान पान भोग जग, रुठ्या मेरा तकदीर॥१॥
ऊभी अडिकूं कोयल ज्यों कू-कू, नैना टपक रहा नीर।
खोजत फिरत खलक में खबऱ्यां, कहां मिलसी गुरु पीर॥२॥
लागा तीर विरह का तस्कर, हृदय भई लकीर।
अंकित नाम श्याम उर अन्दर, देखो कलेजो चीर॥३॥
दुनिया दारी लागे खारी, हिये में गम गम्भीर।
छुटी आस विश्वास भरोसा, टूटा सकल से सीर॥४॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम कृपालु, आय बटाओ भीर।
''शान्तिदास'' अरज करे ऊभा, है कोई विरला वीर॥५॥

भजन (६७) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! सतगुरु लिया सुधार।
करि कृपा मेरे सतगुरु स्वामी, डूबत किया उद्धार।।टेर।।
अति अज्ञानी बड़ो अभिमानी, बेशर्मी बेकार।
की मनमानी गई ज़िन्दगानी, आदत का लाचार।।१।।
कुबदी कपटी लम्पट लबारो, जारो अन्त ना पार।
गुरु गम सैन समझ नहीं सोजी, ऐसो मूर्ख गँवार।।२।।
चोर जुवारो अवगुण गारो, हरकत में हुशियार।
नामी नीच निकाम निसरडो, दुष्टों का सरदार।।३।।
अपनो जान अपनायो दाता, दुरमति दूर विडार।
देखा हाल निहाल पलक में, करदी मौज अपार।।४।।
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूरा, सबके सिरजन हार।
"शान्तिदास" शरण भया निर्भय, थाँपर दारमदार।।५।।

भजन (६८) राग आसावरी पद गाने का

सखी मैं गुरु चरणों की दासी।
सतगुरु देव दया कर काटी, जन्म मरण की फांसी।।टेर।।
आत्म ज्ञान दियो गुरु दाता, हृदय भया उजासी।
मिटिया भ्रम भूल उर अविद्या, ना कोई आन उपासी।।१।।
भैंरूं भोमिया पीर पैगम्बर, ना कोई तीर्थ कासी।
बिना गुरु कृपा भ्रम में भटके, फिर फिर गोता खासी।।२।।
ज्ञान भण्डार पूर्ण कृपालु, सब सुख की धनराशी।
जिन प्रसाद परम पद पाया, मिट गई भूल उदासी।।३।।
"रामप्रकाश" गुरु महा अवतारी, अजर अमर अविनासी।
"शान्तिदासी" प्रण प्रतीज्ञा, चरण कमल विश्वासी।।४।।

भजन (६९) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां अबके मौज करी।
दुःखिया जान दया बक्साई, विपत्ता दूर हरी।।टेर।।
काढ्यो खोट पोट पापन की, सिर से दूर धरी।
पार उतार दातार दयालू, अंग रंग उमंग भरी।।१।।
दे उपदेश कलेश मिटायो, दिवी सैन खरी।
ले सत सार विसार अनात्म, भव से पार तिरी।।२।।
मिल्या दयाल ख्याल होयो निज को, चरणां आय परी।
कर दी मेहर देर नहीं लागी, सगली बात सरी।।३।।
"रामप्रकाश" गुरु परम पुरुषोत्तम, सम्मुख मुक्ति धरी।
"शान्ति" दास विश्वास भरोसो, वृथा जगत डरी।।४।।

भजन (७०) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां दया करो दातार।
पल पल मांहि पुकारे प्यासी, दासी थारे द्वार।।टेर।।
धन यौवन अन्न ना कोई लक्ष्मी, न तन में तकरार।
चरणों की भक्ति मोहि दीजे, कीजो नैया पार।।१।।
मात न तात भ्रात सुत बांधव, ना कुटुम्ब परिवार।
राज न काज समाज न चाहिये, ना मुझे मान स्वीकार।।२।।
ज्ञान न ध्यान विद्या सुख साधन, ना आदर सत्कार।
जोग न भोग योग यज्ञ नाहीं, न सुख कुल संसार।।३।।
दे अभय दान दूर करो दुविधा, अर्ज सुणो सरकार।
पावन चरण शरण बक्साओ, तब आवे इतबार।।४।।
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूरा, धर आया अवतार।
अपनी जान उभारो "शान्ति", भुलूं ना उपकार।।५।।

भजन (७१) राग आसावरी पद गाने का

साधो भाई ! सुधरे नाहि संसार।
उलटी बुद्धि शुद्धि नहीं हृदय, समझाऊँ किस प्रकार।।टेर।।
सतसंग प्रेम नेम नहीं जाने, नहीं गुरुओं से प्यार।
आवे सन्तों से करे बखेड़ा, लड़ने में हुशियार।।१।।
साची बात सुणे ना समझे, कूड़ सदा स्वीकार।
धर्म कर्म पुरुषार्थ नाही, किस विध हो भवपार।।२।।
खान पान अभिमान इश्क में, बन रहे थानेदार।
पाप पुण्य का पता ना राखे, मूर्ख मूल गँवार।।३।।
विपरीत बुद्धि शुधि ना हृदय, बेशर्मा बैकार।
कर्म धर्म ना शर्म सांकड़ी, व्यभिचारी नर नार।।४।।
उलझे आप ताप तिहुं भोगे, कुकर्म करे हजार।
परधन और पाखण्ड करने में, बिन बतलाया तैयार।।५।।
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, शोभा अगम अपार।
''शान्तिदास'' शरण सतगुरु की, निश्चय हो निस्तार।।६।।

भजन (७२) राग आसावरी पद गाने का

सखी मेरो पियो है परदेशी।
वो परदेश देश से न्यारो, कैणी लगे ना कैसी।।टेर।।
धर बिना अधर सधर बिना सेरी, शोभा अनोखी ऐसी।
नहीं राह डगर बिना नगरी, कौन किसे मग बेसी।।१।।
ज्ञान ध्यान उनमान से आगे, लक्ष्य लगन नहीं लेसी।
सन्त ग्रन्थ अनन्त कथ थाक्या, पार पड़े ना पेसी।।२।।
मेरा पीव प्रेम से पूर्ण, प्रीत कोई कर लेसी।
है दिलदार प्यार का सागर, और क्या कहुँ विशेसी।।३।।

बेगम नगर नजर नहीं पहुँचे, निरख परख चित्त देसी।
झांकी बाँकी अमर है वांकी, और नहीं उन जैसी ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु नगर निवासी, शरण जिज्ञासी रेसी।
"शान्तिदास" पास है प्रीतम, नहीं कोई राग न द्वेसी ॥५॥

भजन (७३) राग आसावरी पद गाने का

अब मैं एक देवता ध्याया।
पल पल पूजा वन्दन आरती, चरणां शीश नमाया ॥टेर॥
जब तक विमुख रही तब तक, बहुत घणा दुःख पाया।
दरस्या दरश हर्ष हृदय में, आनन्द गजब का आया ॥१॥
मेरे देव है सकल शिरोमणि, बड़ी निराली माया।
अनुपम झलक खलक में झलके, तीनों काल इक राया ॥२॥
सामर्थ देव सकल में व्यापक, खण्ड ब्रह्मण्ड जब जाया।
निराकार साकार चराचर, निर्लिप्त निरदाया ॥३॥
गयो जमारो वृथा सारो, झूठा पाहन पूजाया।
साचा देव मिले घट भीतर, तब मैं घणा पछुताया ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरुदेव हमारे, सामर्थ सकल सराया।
"शान्ति" शरण ओट ली साची, प्रकट परचा पाया ॥५॥

भजन (७४) राग आसावरी पद गाने का

सखी ए मेरा गुरु ब्रह्मवेता।
ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप स्वरूपा, गुंज गूढार्थ देता ॥टेर॥
परमार्थ पुरुषार्थ आगर, जीव उभारण हेता।
ले अवतार पार किया अनन्तों, तार लिया भव बहेता ॥१॥
न कोई डेट रेट ना फिक्स, भेंट कछु ना लेता।
दे सतसार बिडारे दुरमति, आवे शरण में जेता ॥२॥

भेंट लेवे पर लेवे शीश की, विरला हरिजन देता।
शीश सटे बक्सीश निजात्म, सतगुरु सन्मुख रेता॥३॥
महिमा अनन्त अन्त नहीं आवे, सन्त ग्रन्थ सब केता।
अगम अपार पार ना पावे, सकल जिज्ञासु सेता॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु परम पुरुषोत्तम, सत्य धर्म के नेता।
"शान्ति" कहै गुरुदेव दया से, आय शरण में चेता॥५॥

भजन (७५) राग आसावरी पद गाने का

मेरा सतगुरु है अद्वैती।
अति अद्वैत द्वैत ना लेसा, सत्य सत्य कह देती।टेर॥
पक्षपात का साथ ना देवे, बात यथार्थ जेती।
होय नचीत जीत मन इन्द्रिय, निश्चल निज निर्भेती॥१॥
ब्रह्म विचार सार सत आत्म, वेदान्त सिद्धान्त सेती।
भेद मिटाया अभेद लखाया, कैद काटदी बेती॥२॥
बिना सतगुरु म्हाने कौन लखाता, योहीं दीन बन रेती।
भव में जाती बहु दुःख पाती, गुरु वचनों से चेती॥३॥
क्या गुण गाऊँ पार ना पाऊं, और घणी रह छेती।
अनन्त अपार अथाह असीमित, और विशेष क्या केती॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ मिलिया, ज्ञान खाण गुण लेती।
"शान्तिदास" पर कृपा करके, तार्‌यो कुटुम्ब समेती॥५॥

भजन (७६) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां अब अबला को अपनाओ।
अर्ज करूं चरणों में ऊभी, क्यों मुझको तरसाओ।टेर॥
क्या मेरे से भई नाराजगी, क्यों मेरे ना आओ।
क्या दर्शन को काबिल कोनी, साची कह सुनाओ॥१॥

और शिष्यों सतसंग करने को, दूर दूर थे जाओ।
होय उदास मोर जु विलखुं, अबतो दया बक्साओ ॥२॥
सोई सज्जन बड़भाग तीव्र है, सन्मुख सदा रहावो।
है मन्दभाग मलीन प्रारब्ध, शरणे आई ठुकराओ ॥३॥
क्या ऐसी रजा सजा में भुगतूँ, प्रकट खोल बताओ।
सहा ना जाय वियोग विछोवा, क्यों न दर्श दिखाओ ॥४॥
''रामप्रकाश'' गुरुदेव दयालु, अर्ज मेरी चित्तलाओ।
दर्शन प्यासी अति उदासी, ''शान्ति'' शरण लगाओ ॥५॥

भजन (७७) राग आसावरी पद गाने का

साधो ! चाय जोरावर लागी।
लाग लाग अथाग अनहोती, चारूं कूण्ठ में छागी ।टेर॥
चाय चुड़ेलन गजब भूतनी, कलियुग में यह आगी।
आ दिया डेरा सब ने घेरा, छोड़ा नहीं कोई बाकी ॥१॥
छोटा मोटा भर भर लोटा, पीवण लागा बैथागी।
अन पाणी का हो गया टोटा, माँगण हार बनागी ॥२॥
शान सम्पत्ति खोदी सारी, जर जेवर बिकवागी।
सब कुछ बेच भया भिखियारी, सारो टापरो या खागी ॥३॥
गृहस्थ सन्यासी खाय ना धापी, सन्तों लारे भागी।
सबको खाय अघाय न अजहूँ, ढूंढ लिया वैरागी ॥४॥
टेम बेटेम नेम ना निश्चित, बड़ी नीच है नागी।
है अफशोस समझ बिन सूना, नशा करे निरभागी ॥५॥
''रामप्रकाश'' गुरु दया करि जब,मोह नींद से जागी।
कहै ''शान्ति'' गुरुदेव दया से, दुर्व्यशनों को त्यागी ॥६॥

भजन (७८) राग आसावरी पद गाने का

सन्तों ! कूड़ वचन मत भाखो।
बोलो साच आंच ना कोई, कूड़ से मर गये लाखो।।टेर।।
साचा समझ शरण थारी आवे, दया दृष्टि कर झांको।
कूड़ कपट छल बल कर प्रपंच, उल्टो पाओ क्यों नाको।।१।।
कर्म धर्म पुरुषार्थ ही ना, ज्ञान ध्यान नहीं फाको।
माया कारण फिरो भटकता, अति उबाये बाको।।२।।
बोलो कूड़ धूड़ थारे शिर में, लाजे बिरद सन्ता को।
बानो धरे कदर नहीं जाने, कालो मुँह है जांको।।३।।
कांई कमायो जन्म गमायो, कूड़ मचायो हाको।
जाल फैलाय फंसाय जीवों को, सारो बिगाड़्यो खाको।।४।।
धर्मराय बतलाय कूड़ सच, लेखो लेवे वो थाको।
साची कहत नहीं शर्मावां, काई कर देस्यो म्हांको।।५।।
"रामप्रकाश" गुरु परम दयालु, म्हाने शरण में राखो।
"शान्तिदास" अरदास आपने, किया धिकेलो धाको।।६।।

भजन (७९) राग आसावरी पद गाने का

गुरुसां ! क्यों थे लीयो मन मोड़।
साच बताओ कह सुनाओ, कैसे दियो मोहि छोड़।।टेर।।
कौन जालिम ने जुलम कमायो, के अलुझायो झोड़।
किण बिलमाया तोहि बहकाया, असली देओ निचोड़।।१।।
क्यों मेरे से भई नाराजगी, क्यों थे हो रुँह तोड़।
दया विचारों शिष्य हूँ थारो, मारो मति मरोड़।।२।।
प्रीत तिहारी लागत प्यारी, पीछे रहीं हूँ दोड़।
दर्श दिखाओ मत तरसाओ, करूं घणा घण कोड़।।३।।

गुरु ''रामप्रकाश'' परम कृपालु, अरजी है कर जोड़।
''शान्तिप्रकाश'' दास है थारो, देओ चरण में ठोड़।।४।।

भजन (८०) राग सोरठ फकीरी

फकीरी ! निज की करो पहिचान।
जब तक अपना आप नहीं जाने, मिटे ना खैंचातान।।टेर।।
मिथ्या असार अनात्म देही, अपनो लियो क्यों मान।
नहीं तूं देह देह नहीं तेरी, तज दे उलटी बान।।१।।
कर्म उपासना योग बहु भांती, है उर में उलझान।
कर कर यतन हारे बहुतेरे, होवे नहीं ब्रह्मज्ञान।।२।।
ब्रह्मज्ञान मुक्ति का हेतु, महावाक्य सुण कान।
आपो आप लखों निज चेतन, होवे मिथ्या जग भान।।३।।
जप तप व्रत तीर्थ बहु क्रिया, फिर-फिर होवे हैरान।
जनम गमायो हाथ कांई आयो, पायो नहीं भगवान।।४।।
''रामप्रकाश'' गुरु परम पुरुषोत्तम, ऐसे दयानिधान।
''शान्ति'' गरक फिकर ना रंचक, ऐसो फकड़ मस्तान।।५।।

भजन (८१) राग सोरठा, पद गाने का

फकीरी ! गुरु मेरे परम दयाल।
कृपा करें हरे सो संकट, पल में करे निहाल।।टेर।।
ले अवतार आविया जग में, पूर्ण है प्रीतिपाल।
सूता जगावे भरम मिटावे, दे चौरासी टाल।।१।।
ब्रह्म विचार सार सत देवे, तारे जीव कंगाल।
आवागमन का भ्रम मिटावे, काटे कर्म जंजाल।।२।।
शरणे आवे सोई सुख पावे, मिटा जावे उर साल।
भुजा पसार उभारे अनन्तों, क्षमा करे तत्काल।।३।।

"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूरा, स्वयं श्री गोपाल।
"शान्तिदास" शरण में डेरा, शोभा बड़ी विशाल॥४॥

भजन (८२) राग सोरठ, सारंग पद गाने का

परदेशी प्यारे ! क्यों तुम रहो मोसे दूर।
आय दिखाय दरश दुखिया को, सुणिये अर्ज जरूर॥टेर॥
प्रीत लगाय बसे परदेशां, हृदय भयो निठूर।
सुध विसराई जान पराई, यारी थारी सब कूर॥१॥
ना तेरी खबर सबर करूं कैसे? उर में उठे फितूर।
दर्श दिखादे प्राण बचादे, समझ मुझे मजबूर॥२॥
तरसे नैन चैन ना तन मन, मुख मुरझायो नूर।
तुमरो वियोग सह्यो नहीं जावे, होयो कलेजो चूर॥३॥
परम प्रभु अब कृपा करके, देखो हाल हजूर।
"शान्ति" शरण करो सब पूरा, दुनिया का दस्तूर॥४॥

भजन (८३) राग सोरठ, सारंग पद गाने का

देसिक जी ! देवो दया वरदान।
आय पुकारे गुरु के द्वारे, अरज सुणो भगवान॥टेर॥
जन्म जन्म का भूला भटकूं, होयो खूब हैरान।
नजर निहारो बड़ो दुखियारो, तुम हो दयानिधान॥१॥
अवगुण गारो अपरम्पारो, आप गुणों की खान।
मैं पापी अपराधी ऐसो, क्या मुख करूं बखान॥२॥
ले अवतार अनन्त उभारे, किये केते कल्यान।
तुम मां बाप माफ करो अवगुण, अपनी समझ सन्तान॥३॥

मैं मतिहीन अज्ञान अनाड़ी, बहुत घणो बेईमान।
झूँठों कलंकी नीच नालायक, दुःखदायक नादान ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु परम दयालु, अरज सुणो श्रीमान।
ओ अहसान उमर नहीं भूलूं, "शान्ति" पिंजर प्रान ॥५॥

भजन (८४) राग सोरठ, सारंग पद गाने का

रटूँ निज श्याम धणी को नाम।
पल पल श्वास श्वास में सुमिरण, निशदिन आठों याम ।टेर॥
रटूं मैं नाम नाभि से निरन्तर, मनवो भयो गुलाम।
इडा पिंगला सोज सुषुमणा, तृष्णा मिटी तमाम ॥१॥
लिव लागी निजनाम की, जग से भई निष्काम।
हो अचाय चाह है केवल, अविनासी की धाम ॥२॥
पाई धाम काम सब पूर्ण, लख्यो लोभ ललाम।
काम क्रोध मद मार गिराया, खूब किया इन्तजाम ॥३॥
आदू धाम जहां श्याम विराजे, निरखत हुआ आराम।
अरस परस हो गई श्याम से, सुरती भरे सलाम ॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु कृपा पाया, अति अक्षय उपराम।
"शान्तिशरण" चरण की दासी, कोटि कोटि प्रणाम ॥५॥

भजन (८५) राग विरहणी सोरठ, सारंग पद

परदेशी राजा क्यों मेरे ना आय।
तेरी दिवानी रो रही रानी, आय के गले लगाय ।टेर॥
चैन ना रैन दिवस ना क्षणभर, नैणा नीन्द न आय।
प्रेम विभोर और नहीं दीखे, जग में तेरे सिवाय ॥१॥
व्याकुल विवस भई बावरी, जग पागल बतलाय।
मच रही हूक कूक कलेजे, टूटी आस उपाय ॥२॥

कौन जालिम ने जाल बिछाया, तोहि लिया अलुझाय।
कौन सुन्दरि निरख लुभाया, बातों में बिलमाय॥३॥
नित्य निहारूं राह तिहारूं, पलक नहीं विसराय।
ऊठत बैठत जागत सोवत, पल पल याद सताय॥४॥
परम श्याम हो कृपा सिन्धु, अब मोहि दरश दिखाय।
"शान्तिदासी" अति उदासी, आयके धीर बन्धाय॥५॥

भजन (८६) राग सोरठ, सारंग पद गाने का

पायो निज महरम गुरु प्रताप।
गुर गम रमझ समझ कर साधन, मेट्यो सब संताप॥टेर॥
गुरु मुख वाक्य मिल्यो महामन्त्र, जपिया अजपा जाप।
श्रवण मनन निदिध्यासन किया, गुन गुन रहुं चुपचाप॥१॥
सत चित्त आनन्द निजानन्द पूर्ण, केवल भूमा अमाप।
उनमुन होय ओलख्यो आत्म, अविगत अटल अनाप॥२॥
महिमा अथाह अपार अपरबल, चेतन आपो आप।
षट् शास्त्र व्याकरण गीता, वर्णित वेद अलाप॥३॥
"रामप्रकाश" गुरु कृपा करके, मेट दिया तिहुं ताप।
"शान्तिदास" आस भई पूर्ण, निर्भय नित निष्पाप॥४॥

भजन (८७) राग होरी काफी ताल दीपचन्दी

होरी ! नित सतसंग करोरी।
बिना सतसंग ज्ञान नहीं होवे, ज्ञान बिन जन्म मरोरी॥टेर॥
सतसंग सार धार उर अन्दर, मिथ्या असार तजोरी।
हो हुशियार विचार अपार पुनि, निष्काम राम भजोरी॥१॥

घर वैराग त्याग विषयों को, सुमिरण लाभ लुटोरी।
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धा, इन में ना लीपटोरी ॥२॥
कर विवेक एक लख आत्म, अवगुण दूर हरोरी।
हरि गुरु सन्त शरण ले सांची, हरदम ज्ञान भरोरी ॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु परम दयालु, जिसकी शरण परोरी।
''शान्ति'' चरण शरण सामर्थ के, लाग रही नित डोरी ॥४॥

भजन (८८) राग छन्द भैरवी पद

तुम देखो शरण में आयके, सतगुरु दयाल जबर है।टेर॥
शरण आये को शरणे राखे, सार शब्द हित सबको भाखे।
ऊँच नीच रंच भेद न वांके, सबको हृदय लगाय के॥
निज देवे ज्ञान अमर है॥१॥
दीन दयाल बड़े तपधारी, अधम उद्धारण नर देहधारी।
महिमा मुरारी अगम अपारी, आया कष्ट उठाय के॥
सबकी लेत खबर है॥२॥
करुणा निधान खाण सुखरासी, अजर अमर अक्षय गुरु अविनासी।
जन्म मरण की काटे फांसी, बन्धन सारा छुड़ाय के॥
करे मुक्त वन नम्बर है॥३॥
श्री गुरु ''रामप्रकाश'' हमारे, हम चरणन के दास तिहारे।
''शान्ति'' रक्षक गुरु प्राण आधारे, शुद्ध स्वरूप लखाय के॥
अब आई परम सबर है॥४॥

भजन (८९) राग छन्द भैरवी पद

मेरे सतगुरु दीन दयाल है, कोई आय शरण में देखो।टेर॥

जो जन सतगुरु शरणे आवे, भवसागर से पार हो जावे।
दया प्रताप परम पद पावे, गुरु काटे कर्म जंजाल है॥
सारो मिटावे सेको॥१॥

शोभा कहुँ क्या कही ना जावे, अगम अपार पार ना पावे।
वेद ग्रन्थ सन्त शास्त्र भावे, गावे पावे जिका निहाल है॥
टूट गयो जग लेखो॥२॥

यह संसार स्वार्थ का सारा, जल्दी निकलो समझो प्यारा।
चहुं दिस हो रही हा हा कारा, जग सिर पर गरजे काल है॥
क्यों लियो नरकों को ठेको॥३॥

गुरुवर "रामप्रकाश" अवतारी, डूबत रक्षा करो हमारी।
"शान्ति" है अब शरण तिहारी, पूर्ण प्रीति पाल है॥
दया की दृष्टि टेको॥४॥

भजन (९०) राग छन्द भैरवी पद

बैठी हूँ आस लगाय के, गुरु दयालू आसी॥टेर॥

बैठी निशदिन आस लगायां, घर का काम काज विसरायां।
सतगुरु देव के दर्शन पायां, सारा बन्धन छुड़ाय के॥
मिट जाये चौरासी फांसी॥१॥

ज्ञानी ध्यानी दानी दिलवर, प्यारे प्राण आधारे गुरुवर।
सतगुरु चरण ज्ञान गुण सरवर, जामे मल मल न्हाय के॥
म्हारा पाप सारा धुप जासी॥२॥

देसक दाता पर उपकारी, अजब अनुपम शोभा भारी।
जीवों कारण ले अवतारी, जब मानव देह धराय के॥
गुरु चरणों गंगा कासी॥३॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, जो जन ध्याय शरण में जाता।
मन वांछित पूर्ण फल पाता, जो ध्यान धरे चित्तलाय के॥
गुरु सदा सुखरासी॥४॥
"रामप्रकाश" गुरुदेव दयाला, अपने अंस को आन सम्भाला।
कर्म भ्रम का तोड़ दिया ताला, "शान्ति" शरणे आय के॥
पद पाया अमर अविनासी॥५॥

भजन (९१) राग छन्द भैरवी पद

राह निहारूँ मेरे श्याम की, पल पल घड़ी घड़ी॥टेर॥
तन तड़फे मन धीर धरेना, भई व्याकुल चित्त चैन परे ना।
विसरी शुध बुध बोध करेना, मैं रहीं ना किसी काम की॥
हरदम पुकारूँ खड़ी खड़ी॥१॥
पल पल प्रीतम याद सतावे, नैणा नींद नहीं अन्न-जल भावे।
श्याम सुन्दर मेरे कब घर आवे, लिव लागी है हरि नाम की॥
म्हारे उर में लागी झड़ी झड़ी॥२॥
श्याम सुन्दर के दर्शन हीना, प्यासी जैसे जल बिन मीना।
दुष्कर हो गया जीवन जीना, मैं शपथ लेऊं श्रीराम की॥
उर ऐसी आन अड़ी॥३॥
मन वच कर्म पीव पद पूजा, स्वप्ने और पुरुष ना सूझा।
उर में आय दाय ना दूजा, प्रीत सकल धन धाम की॥
तोड़ी मोह कड़ी कड़ी॥४॥
पीव प्यारे का लीना शरणा, प्रीतम संग में जीना मरणा।
शेष रहा ना कछु भी करणा, प्रवाह ना नाम बदनाम की॥
चरणन "शान्ति" पड़ी पड़ी॥५॥

भजन (९२) राग भैरवी, पारवा पद गाने का

सतगुरु रामप्रकाश बड़ा ही महरबान है रे॥टेर॥

दया करि मुझ ऊपरे, मिटियो सारो कलेश।
इन्द्र ज्यूँ आय बरसिया, साचा दिया उपदेश।
विद्या में विद्वान है रे॥१॥

भूले अज्ञानी जीव को, तार दिया पल माहि।
हित कर हिय लगाविया रे, डूबत झेली मेरी बाहि।
ऐसा दयानिधान है रे॥२॥

सूता आय जगाविया, म्हारी निन्द्रा दिवी विडार।
अपना आप लखाविया, सन्मुख होया रे दीदार।
मनवो तो मसतान है रे॥३॥

दर्शन से दुःख विसरे रे, संकट सब हर लेह।
शरणे आवे सोई उभरे, अजर अमर कर देह।
सारे सुखो की खान है रे॥४॥

मात अरु तात कुटुम्ब कुल बन्धु, स्वार्थ का संसार।
इनकी यारी झूँठी सारी, देखा नजर पसार।
सारा जग बेईमान है॥५॥

जात न पात वर्ण कुल आश्रम, ऊंच नीच न कोय।
पक्षापक्ष लक्ष नहीं रंचक, जो जिज्ञासु होय।
सब वांके एक समान है रे॥६॥

वेद ग्रन्थ सन्त शास्त्र, सभी गुण गावे।
नारद शारद शेष सहस्त्र मुख, तो भी हार मनावे।
महिमा गूढ़ महान है रे॥७॥

परम गुरु परमात्मा का, ना समझो कोई दोय।
द्वेत मति सो है बावरा रे, ''शान्ति'' लिया उर जोय॥
यह सागी भगवान है रे॥८॥

भजन (९३) राग छन्द भैरवी पद

गुरु रामप्रकाश अब भेटिया, धन भल भल भाग हमारा ।।टेर॥
सामर्थ गुरु का लिया शरणा, झूठ जगत से अब क्या डरणा।
ज्ञान ध्यान गुरु संग करणा, निर्भय हो मैं बैठिया।
छोड़ मिथ्या सब कारा॥१॥
शरणे आय गुरुगम पाई, राम नाम की युक्ति आई।
श्रवण मनन साधन चित्त लाई, संशय सारा मेटिया।
म्हाने कर दिया भव से पारा॥२॥
अखंड भंडार रिद्धि सिद्धि के दाता, रमझ समझ जन शरणे आता।
जम जालम का फाडदे खाता, मेटे कर्मन लेठिया।
लख चौरासी लारा॥३॥
करुणा निधान शोभा बड़भारी, करे गुणगान सकल नरनारी।
वेद ग्रन्थ सन्त कथ कथ हारी, कई भरी पड़ी है पेटिया।
गुरु ''उत्तमराम'' के द्वारा॥४॥
''रामप्रकाश'' मिल्या गुरु पूरा, भरम करम सब भाग्या दूरा।
''शान्तिप्रकाश'' है निर्मल नूरा, सतगुरु सामर्थ सेठिया।
म्हारे जीवन प्राण आधारा॥५॥

भजन (९४) राग छन्द भैरवी, पारवा पद गाने का

गुरुदेव बिना ना आवड़े, कही मन नहीं लागे योरा।।टेर॥

सतगुरु देव के दर्शन हीना, तड़फ रही ज्यूं जल बिन मीना।
मुश्किल हो गया जग में जीना, गुरुदेव पाछा कब बावड़े।
गुजरत है दिन दोरा ॥१॥

जन्म जन्म की दुखिया दासी, अबला अरज सुणो अविनाशी।
बिन आये उर घोर उदासी, बेग आओ म्हारं गांवड़े।
राह निहारूं नित तोरा ॥२॥

पंख होवे तो उड़ उड़ जाऊं, श्याम सुन्दर को जाय बतलाऊं।
लौट अकेली घर ना आऊँ, यह धारी मन मायड़े।
लागी लगन बड़ी जोरा ॥३॥

जगत् जाल यह बन्धन भारा, कैसे छुड़ाऊं इनसे लारा।
देख जीव घबरावे म्हारा, सभी खावण को धावड़े।
घर टाबर छोरी छोरा ॥४॥

नैणा नीर बहे नींद ना आवे, नाज काज मोहे कुछ न भावे।
पल जीने को जी ना चावे, खड़ी पड़ी हूँ तावड़े।
म्हारे हृदय उठे हिलोरा ॥५॥

महिमा अपार पार ना पावे, अगम निगम संत पंथ सब गावे।
कथ कथ विगत सभी थक जावे, थारी गति नहीं नावड़े।
कवि कोविद कहे कोरा ॥६॥

"रामप्रकाश" दया के सागर, मैं तो हूँ चरणों का चाकर।
"शान्ति" प्रकाश शरण में आकर, यहीं गुरु चित्त चावड़े।
कर दर्शन होउं सोरा ॥७॥

भजन (९५) राग छन्द भैरवी, पारवा पद गाने का

म्हाने गुरु मिले अविनासी रे चोड़े धाड़े ॥टेर॥

गुरु चित्त चोहटे मांहि, नहीं कोई ओले छाने।
अन्तर खोल मिले गुरवर से, परवाह नहीं अब म्हाने।
जावे चुगलिया चौरासी रे॥१॥
यह संसार ज्ञान का अन्धा, आँख छते ना दीखे।
असली को नकली कर माने, उलटी वाणी सीखे।
यह तो आवागमन में आसी रे॥२॥
ले अवतार जगत में आया, डूबत तार्‌या मोय।
दे उपदेश किया शुद्ध चेतन, भरम दिया सब खोय।
कटी काल की फांसी रे॥३॥
सूता जगाया पार पहुँचाया, महिमा जारी अनन्त।
यामे कोई अन्तर नाहीं, सन्त कहो भगवन्त।
गुरुजी अमर लोक के वासी रे॥४॥
विवेक वैराग साधन उर श्रद्धा, सम सन्तोषी साध।
जग की जीत रहे जग मांही, सब की सुने फरियाद।
उनमुन रहत उदासी रे॥५॥
"रामप्रकाश" गुरु महा अवतारी, ओ म्हाने विश्वास।
शरणे परचा पाया, होयो तिमिर को नास।
"शान्ति" चरण कमल की दासी रे॥६॥

भजन (९६) राग आसा, टोडी पद गाने का

मनवो मेरो बड़ो बेईमान है, ये सखी माने ना मोरी॥टेर॥
राम नाम मुख से ना लेवें, जो मैं कहूँ तो मुँह पर देवे।
सुने ना मूर्ख अज्ञान है, ऐ सखी माने ना मोरी॥१॥
मैं तो कहूँ तू अमृत पीले, होय अमर वर सुख से जीले।
ओ छोड़े ना उल्टी बान है, ऐ सखी माने ना मोरी॥२॥

तजदे भोग जोग सत ले ले, होय खराब खलक में खेले।
माया मांहि मस्तान है, ए सखी माने ना मोरी ॥३॥
मेरी बात एक ना माने, साची कहुँ तो उल्टी जाने।
कह कह होई हैरान है, ए सखी माने ना मोरी ॥४॥
कुकर्म कर्म करें बहुतेरे, सन्त गुरु के आये ना नेरे।
सारी गमाई शुधी शान है, ए सखी माने ना मोरी ॥५॥
करुं उपाय कदे ओ मरसी, इन रे मर्‌या म्हारो कारज सरसी।
''शान्ति'' बहुत ही परेशान है, ए सखी माने ना मोरी ॥६॥

भजन (९७) राग आसा टोडी, सोरठ पद गाने का

गुरुसां ! हृदय बड़ो कठोर।
दीनदयाल दया बक्साओ, करो शिष पर गौर ।टेर॥
पल पल माहिं पुकारूं थाने, घणा मचाऊं शोर।
ऊठत बैठत जागत सोवत, उल्टा उठे उर लोर ॥१॥
मैं मजबूर दूर अति तोसे, चले ना मेरा जोर।
कौन सुणे किसको कहुँ मैं, रह जाऊँ नित रोर ॥२॥
म्हारे इष्ट आराध्य आप हो, थारे म्हाँ जैसा कई ओर।
थे आओ घर शिष्य घणाई, मैं दीखुं थाने चोर ॥३॥
बड़ी विसराई जान पराई, दूर भगाई थे धोर।
बिना गुरु श्याम काम नहीं सूझे, बैठी प्रेम विभोर ॥४॥
खावत पीवत बोलत चालत, लगी नाम से डोर।
एक पल भर विसरूं नाहीं, रट रही आठूं पहोर ॥५॥
ऊभी अडिग कोयल ज्यों कूं कूं, यूं व्याकुल मन मोर।
''शान्ति'' दासी अति उदासी, देवो चरण में ठोर ॥६॥

भजन (९८) राग पद गाने का

पायो पायो गुरुजी, म्हानें ज्ञान गुटको।
ज्ञान गुटको, हृदय जाय अटको।।टेर।।
प्याला पाया, तिमिर मिटाया।
आनन्द छाया, उर मिट्यो खटको।।१।।
तृप्त भई काया, खूब छकाया।
अब शर्माया, अभिमान पटको।।२।।
करि गुरु मेहर, नाहीं लागी देर।
आऊँ नहीं फेर, मार्ग कटगो।।३।।
''शान्तिबाई'', शरण सुखदाई।
गुरुगम पाई, राम रटगो।।४।।

भजन (९९) राग पद गाने का

लखायो मेरे सतगुरु, शुद्ध सच्चिदानन्द रूप।
अस्ति भाति प्रिय निज चेतन, ज्योति अजब अनूप।।टेर।।
गुरु वेदान्त सिद्धान्त सुनाकर, दूर किया भ्रम कूप।
श्रवण मनन निदिध्यासन करिया, पायो ब्रह्म स्वरूप।।१।।
देह इन्द्रिय मन बुद्धि प्रेरक, इन सबही के ऊप।
त्रिगुण ताप जाप ना जुक्ती, ऐसो ज्ञान दियो गूप।।२।।
अंग न रंग संग भंग नाही, ना बोले ना चूप।
धरा गगन लगन नहीं लक्षण न छाया ना धूप।।३।।
''रामप्रकाश'' गुरु अगम अगोचर, न प्रकट ना छूप।
''शान्ति'' अशान्ति भ्रम ना भ्रान्ति, ना रंक ना भूप।।४।।

भजन (१००) राग चलत ठुमरी पद गाने का

जन्म गमायो प्यारी, बहिन अरु माता ए॥टेर॥
नहीं हरि नाम लीयो, काई शुभ काम कियो।
कियां अपनावे पियो, खोय दियो हाथा ए॥१॥
जुवायां के जाओ नाठी, रोकी नाय रहो डाटी।
अब क्यों थे होओ काठी, चौरासी में जाता ए॥२॥
असली ना आवे दाय, दुसरो के लागे पाय।
नकली रिझाओ जाय, कर मीठी बाताए॥३॥
ओरों से लगायी प्रीत, अपनो ना लाई चीत्त।
निज की बिगाड़ी नीत, गीत गाल गाता ए॥४॥
हरि का भजन गायां, हो जावे कल्याण बायां।
जन्म सुधारे आयां, सतगुरु दाता ए॥५॥
सन्तों की शरण भारी, लेल्यों थे प्रण प्यारी।
छोड़ दो शर्म सारी, शंको मत आता ए॥६॥
छोड़ो सब कूड़ो कारो, हिये हरिनाम धारो।
राजी होवे राम प्यारो, तोड़ो जग नाता ए॥७॥
कही थाने बात साची, करो जो लागे आछी।
"शान्ति" नहीं सरके पाछी, दर्शन अब दाता ए॥८॥

भजन (१०१) राग पद गाने का

सखी है सारी गुरुकृपा की देन।
दीनदयाल दया बक्साई, होयो हिये सुख चैन।टेर॥
उड़ गई नींद जाग गई झट से, सुन सतगुरुजी के बेन।
जाग्रत जोय लियो मैं प्रीतम, निरख रहीं छवि नैन॥१॥

अति अनजान उलझ गई उल्टी, रहा नहीं कोई तैन।
बिना गुरुदेव म्हाने कौन लखाता, आ निज साची सैन ॥२॥
साधन सार विसार अनात्म, गुरुगम धारी मैन।
कुमति त्याग लाग गई चरणां, भजन करन दिन रैन ॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु कृपा करके, दी लाखीणी लेन।
''शान्ति'' शरण सदा सुखपाई, गुरु गुणसागर ऐन ॥४॥

[नारी शिक्षा / महिमा]

भजन (१०२) राग पद गाने का

आछा होवे रे जिकांरा भैया भाग, सुपात्र घर में बीनणी आवे ॥टेर॥

चार बजे उठ धोयके, लेत हरि का नाम।
पति पद चरण कमल पूजन, फेर उठावे सारो काम।
आलस जिन से आन्तरो जावे ॥१॥

मीठी बोले प्रेम से रे, सबसे राखे हेत।
निस्वार्थ सेवा करे, जीवन अर्पण देत।
पति को हित चित से ध्यावे ॥२॥

रुच रुच करे रसोइयां, हर्ष हर्ष जीव जान।
हंस जिमावे पीव ने, मुँह पे मधुर मुस्कान।
सुलखणी घणी श्याम मन भावे ॥३॥

हंसी हथाई कारणे, कदे ना बाहर जाय।
अति अनुराग त्याग सब प्रपंच, कुछ भी करेना बिन राय।
गुण गुरु श्याम का गावे ॥४॥

लूखी सूखी से दुःखी ना होवे, सोई सबर कर लेह।
है जिसी में मस्त मोकली, पर घर भेद ना देह।
पिया से पहले कभी ना खावे ॥५॥

कर सतसंग सफल करे जीवन, करे सन्तों से प्यार।
सन्त स्नेह सतगुरु से प्रीती, सेवा करण को तैयार।
बैठी नित रामजी ध्यावे ॥६ ॥
ऐसी बीनणी देओ सभी ने, सुण कर राम पुकार।
सब गुण सम्पन्न सदा शुद्ध बुद्धि, सुधरे सारो संसार।
लाखों में ऐसी एक ही पावे ॥७ ॥
मात पिता परिवार में, सब से घुल मिल रेवे।
चोरी जारी चुगली ईर्षा, कटु वचन ना केवे।
"शान्ति" सीधी स्वर्गा में जावे ॥८ ॥

[नारी शिक्षा]

भजन (१०३) राग पद गाने का

अब तो जागो ऐ बहिनों विरलो जमारो ऐ।
मनुष्य जन्म नहीं बारम्बारो ऐ ॥टेर ॥
मुख से थे लो हरि नाम, मुक्ति का मुख्य धाम।
कांई थारो लागे दाम, होवे निस्तारो ऐ ॥१ ॥
छोड़ो सारा झूठा काम, इनसे ना राजी राम।
भजो नित सुबह शाम, सिरजन हारो ऐ ॥२ ॥
बिना हरि कियों हेत, चौरासी में दण्ड देत।
ऊँधा गेरे मारे बैंत, छोड़े नाहीं लारो ऐ ॥३ ॥
आछो अवसर लागो हाथ, बिगड़ी सुधारों बात।
आंख्यां आगे आसी रात, सुझे ना किनारो ऐ ॥४ ॥
सुनो सब भाई बहिनों, अठे तो दिन तीन रहनो।
"शान्ति" कहे साचो कहनो, मानलो हमारो ऐ ॥५ ॥

भजन (१०४) राग पद गाने का

आओ पधारो म्हारा सतगुरु श्याम जी।
सतगुरु श्याम थे तो हूँ राजाणे ग्राम जी।।टेर।।
ऊभी मैं अडीकाँ थाने, दर्शन देओ म्हाने।
अति तरसाओं क्यांने, कांई ओडो काम जी।।१।।
बिना दर्शन थारे, चैन ना होवे म्हारे।
घर परिवार सारे, ओ सूनो लागे गांव जी।।२।।
अब ना लगाओ जेज, लागी लगन है तेज।
हारी सन्देश भेज, जोधपुर धाम जी।।३।।
आवेला दयाल जब, होवेली सम्भाल तब।
करां इन्तजार सब, शिष्य तमाम जी।।४।।
तन मन भेंट देस्यां, दर्शन को लाभ लेस्यां।
थारी ही शरण रेस्यां, सुबह अरु शाम जी।।५।।
दया की नजर डारो, हो जावे कल्याण म्हारो।
"शान्ति" सेवक थारो, करूं प्रणाम जी।।६।।

भजन (१०५) राग पद गाने का

गुरुदेव करायो घट में आत्मज्ञान।।टेर।।
पाँच पच्चीस लख्या अनात्म, माया उपाधि आन।
अपना रूप आप में पायो, मिट गई खैंचातान।।१।।
आत्म ब्रह्म दोनों एक बताया, होई मिथ्या जग भान।
अन्दर बाहर सब घट व्यापक, भेद भ्रम की हान।।२।।
जड़ चेतन स्थावर जंगम, सारो का अधिष्ठान।
दधि में घृत बर्फ में पानी, यों नभ नित्य समान।।३।।

अखण्ड अनामी अन्तरयामी, निश्चल है निर्वाण।
गुरु प्रताप पाई यह महरम, पूर्ण पड़ी है पहिचान॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु सामर्थ पूरा, परम वीर विद्वान।
"शान्तिशरण" मिली निज गुरुगम, ऐसा दया निधान॥५॥

भजन (१०६) राग पद गाने का

प्यारी लागे गुरुसां, थारी धाम हमको।
धाम हमको, प्रणाम तुमको॥टेर॥
देखत धाम, आराम होय चित्त में।
पूर्ण भयो म्हारो, काम सबको॥१॥
शरणे आया, सदा सुख पाया।
लगे नहीं दाया, म्हारे काल जमको॥२॥
खेद मिटाया, अभेद लखाया।
निज दरसाया, अटल ममको॥३॥
मिटिया भम्र, कर्म नहीं व्यापे।
पाय लिया महरम, बेहद ब्रह्म को॥४॥
"शान्तिदासी", मिलिया अविनाशी।
कट गई फांसी, ना डर हम को॥५॥

भजन (१०७) राग पद गाने का

मेरे सतगुरु दयानिधान, दयाकर दिया है आत्म ज्ञान॥टेर॥
भल भल जग में आया, सूता को आन जगाया।
मिटायो सारो तिमिर अज्ञान॥१॥
गुरु किया बड़ा उपकारा, जीवों हित घर आया अवतारा।
देवे गुरु जीवन को अभय दान॥२॥

मुझे दुःखी देख अपनाया, भवसागर पार लगाया।
मैं तो भूलूँ ना आसान॥३॥
ऐसी अनुपम माया, ज्यारा भेद कोई ना पाया।
शोभा क्या मुख करूँ बखान॥४॥
मोपर अति दया बरसाई, गुरुवर कमी राखी ना काई।
अपना चरणन सेवक जान॥५॥
गुरु "रामप्रकाश" जी दाता, "शान्तिप्रकाश" नित शीश नवाता।
मैं तो करूँ गुरु गुण गान॥६॥

भजन (१०८) राग पद गाने का

म्हाने गुरुजी बतायो निज नाम, गुरुजी की जय बोलो॥टेर॥
गुरु अवतार धर आविया, सूता को आय जगाविया।
सुमिरण दिया आठोंयाम॥१॥ गुरुजी की जय बोलो
कर्म भ्रम भगाविया, अपना स्वरूप लखाविया।
म्हारो पूर्ण भयो सारो काम॥२॥ गुरुजी की जय बोलो
जय बोले से अन्तःकरण शुद्धि, निर्मल देह आवे बल बुद्धि।
कांई लागे गाँठी से तेरा दाम॥३॥ गुरुजी की जय बोलो
सतगुरु देव ने किया हित सार, काज लिया अवतार।
ना जाने जगत हराम॥४॥ गुरुजी की जय बोलो
ऊँच नीच भेद ना बाँरे, शरणे आवे जाको पार उतारे।
जीवों को पूरो इन्तजाम॥५॥ गुरुजी की जय बोलो
सतगुरु देव दयाल जबर है, खण्ड ब्रह्मण्ड की लेत खबर है।
भरपूर चराचर आम॥६॥ गुरुजी की जय बोलो
महिमा अपार पार नहीं पावे, अगम निगम कथ कथ थक जावे।
गाय नाम थके है तमाम॥७॥ गुरुजी की जय बोलो

''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, जाकी महरम लखे सन्त सूरा।
गाँव जोधपुर धाम ॥८॥ गुरुजी की जय बोलो
''शान्ति'' है गुरु चरणों की दासी, मिटिया भ्रम मिले अविनासी।
कोटि कोटि प्रणाम ॥९॥ गुरुजी की जय बोलो

भजन (१०९) राग पद गाने का

हंसलो बसे म्हारो गुरुसां के देश में।
सईयों मोरी खाली पड़ी म्हारी खोड़॥टेर॥
मनवो मेरो ऐ मर्‌यो माने नहीं।
है जी कोई सारो से मुंह मोड़॥१॥
बुद्धि शुद्धि ऐ सईयों म्हारी सारी बिसरी।
है जी कोई चित्त चिन्तन दियो छोड़॥२॥
अहं अहंकार सईयों कबको ही हो गयो।
है जी कोई करें सदाई म्हासें झोड़॥३॥
अन्तःकरण इस्तीफा सईयों दे दियो।
है जी कोई लीयो सम्बन्ध म्हासे तोड़॥४॥
करण बैरण सारी सईयों भोरी हो गई।
है जी कोई रही है तेजी से बड़ी दोड़॥५॥
''रामप्रकाश'' गुरु वासी उण देश का ए।
है जी कोई ''शान्ति'' मिलन को कोड़॥६॥

भजन (११०) राग पद गाने का

गुरुवर रामप्रकाश दयालू, म्हारे मौज करी॥टेर॥
सूता आय जगाविया, म्हारी निन्द्रा दिवी विडार।
दया कर चरण लगाविया, दियो जनम सुधार।
लखाई दाता सेन खरी॥१॥

परमार्थ कर आविया रे, ले जग में अवतार।
शुद्ध स्वरूप लखाविया, मेट्या भ्रम अन्धार।
विपत्ति सब दूर हरी॥२॥

सेन दिवी ब्रह्मज्ञान की, म्हारा मिट गया राग रु द्वेष।
गम पाई निरवाण की रे, अविद्या रहीं नहीं लेष।
टूट्या बन्द होई मैं फिरी॥३॥

गुरु "रामप्रकाश" प्रताप से, म्हैं तो पायो असल निज नाम।
"शान्तिप्रकाश" शरण सतगुरु की, कोटि कोटि प्रणाम।
गुरु की गम हृदय धरी॥४॥

भजन (१११) राग पद गाने का

दयावर दीजिये जी मेरे, सतगुरु दयानिधान,
हमारी अरज सुणो श्री मान।टेर॥

मैं शरणागत शरणे आया, शोभा सुनी महान।
शिष्य समझ सुधारो जीवन, बिगड़ रही है शान॥१॥
मैं खल कामी मूर्ख हरामी, ना उर ज्ञान न ध्यान।
दया विचारो भ्रम विडारो, मेटो खैंचातान॥२॥
यह मन मूर्ख मर्‌यो नहीं माने, उल्टी इनकी बान।
विषय न त्यागे भोगों में भागे, खूब मचावे तोफान॥३॥
दे उपदेश कलेश निवारो, टालो भव दुःख खान।
हे वरनायक सुखदायक दाता, भुलू नां अहसान॥४॥
"रामप्रकाश" गुरु समर्थ पूरा, मोड़ी पड़ी पहिचान।
"शान्ति" प्रकाश दास चरणां को, करूं थारां गुण गान॥५॥

भजन (११२) राग पद गाने का

गुरुदेव हमारे आवो सा, म्हें दर्शन पावांला।
दर्शन पावाला, जीवन सफल बनावाला ॥टेर॥
पल पल तुम्हें पुकारां म्हें सा नित नित राह निहारां।
तन मन थांपर थारां, शीश निवावांला ॥१॥
तुम चरणों में गंगा नित न्हाय धोय होऊं यंगा।
मन गुरु भक्ति रंग रंगा सा, उर उज्ज्वल हो जावांला ॥२॥
आप बिना बड़ा दोरा, सब तल्फे छोरी छोरा।
ओ माने ना मन मोरा सा, किस विध समझावांला ॥३॥
दर्श बिना दुखीयारी, थे दरसो श्याम मुरारी।
म्हारे लागी उम्मेदी भारी सा, अर्ज सुणावांला ॥४॥
थे साचा साहेब मेरा, किया चरण शरण में डेरा।
श्वास श्वास में हेरां सा, ''शान्ति'' गुण गावांला ॥५॥

भजन (११३) राग पद गाने का

आज घर आईया ऐ, म्हारा सतगुरु रामप्रकाश।
सतगुरु रामप्रकाश, हमारी पूर्ण करदी आस।टेर॥
सतगुरु आया आनन्द छाया, होयो तिमिर सब नाश।
सुता जगाया भ्रम भगाया, हृदय किया उजास ॥१॥
दे अभय दान जान शिष्य अपना, मेटी त्रिगुण फांस।
भुजा पसार तार लिया डूबत, आर्त सुन अरदास ॥२॥
दीनदयाल अति उपकारी, अवतारी अविनास।
क्या गुण गाऊं पार न पाऊं, मन्द मति नहीं विद्या विकास ॥३॥
गुरु सुर ज्ञानी सब विधि जानी, वाणी मधुर सुभास।
निरमल बैन सेन सुखदायक, दिया सुमिरण श्वासोश्वास ॥४॥

''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ मिलिया, यो म्हाने विश्वास।
''शान्तिप्रकाश'' दास चरणों का, बात बताई खास।।५।।

भजन (११४) राग आसावरी पद

गुरुजी विवेकी पाया रे चोड़े धाड़े ।।टेर।।
दे सत सेन किया निज चेतन, सूता ने दिया जगाय।
दुखिया देख दया कर दीनी, शरणे लीवी लगाय।
गुरुजी भल भल जग में, आया रे चोड़े धाड़े।।१।।
मेरा गुरु दयाल जबर है, देवे आत्म ज्ञान।
जन्म मरण का बन्धन तोड़े, मेटे खेंचातान।
सुख स्वरूप लखाया रे, चोड़े धाड़े।।२।।
ले अवतार उभारे अनन्तों, शरणे आवे नरनार।
मिथ्या विकार विडार तार दे, भवसागर से पार।
साचा राह बताया रे, चोड़े धाड़े।।३।।
गुण गाऊं गुरुदेवजी का, महिमा अपरम्पार।
वेद ग्रन्थ सन्त कथ कथ थाक्या, आखिर मानी हार।
बड़ी निराली माया रे, चोड़े धाड़े।।४।।
''रामप्रकाश'' गुरु कृपा करके, दिया अटल निज नाम।
''शान्तिदास'' परम सतगुरु को, कोटि कोटि प्रणाम।
चरणों शीश निवाया रे, चोड़े धाड़े।।५।।

भजन (११५) राग पद गाने का

गुरुदेव बिना म्हाने ना आवड़े ।।टेर।।
गुरुसा की याद ऊठत बैठत जागत सोवता।
गुरु दर्शन बिना रहा नित रोवता।
गुरुसा गयोड़ा पाछा कब बावड़े।।१।।

जाय बसी गुरु चरणों में सूर्ति।
चित्त में जड़ाई गुरुदेव की मूर्ति।
सुमिरण रहे म्हारे सुबह शामड़े ॥२॥
मन बुद्धि चित्त चाल्या गुरुजी के लार रे।
दिन रेण चैन नहीं होय गया बैकार रे।
धरूँ कैसे धीर पीर मन मांथड़े ॥३॥
गुरुजी आणे का म्हे तो सुगन मनावा है।
दीन दयालु प्रभु को अरज सुणावा है।
अब तो पधारो म्हारे दू गावड़े ॥४॥
गुरु ''रामप्रकाश'' की करूँ नित आरती।
''शान्ति'' तन मन धन वारती।
थारी गति को कोई ना नावड़े ॥५॥

भजन (११६) राग पद गाने का

उर राम नाम रंग लागो रे, मन होया मस्त फकीर।टेर॥
विवेक वैराग षट् सम्पत्ति, लिवी मुमुक्षा जान।
चारों साधन हेरिया रे, मिटगी खैंचातान।
गुरु कृपा से जाण्यो रे, टूटी भरम जंजीर॥१॥
जान लियो निज रूप को, भयो सकल उपराम।
जगत असार विसार अनात्म, होया मनो निष्काम।
छीलरिया जल त्याग्यो रे, पड़्यो समुद्रां सीर॥२॥
सत असत विलक्षण तत्त्व, निश्चय लीया निहार।
गुरु प्रसाद बाद दिया प्रपंच, सनमुख किया दीदार।
परमानन्द पद पाग्यो रे, जाने विरला बीर॥३॥

गुरु "रामप्रकाश" जी की महर से, मिटियो सारो सन्ताप।
सच्चिदानन्द आनन्द निज पूर्ण, पायो गुरु प्रताप।
अहं ब्रह्म अनुराग्यो रे, "शान्ति" जाग्या है तकदीर ॥४॥

भजन (११७) राग पद गाने का

म्हारे गुरु दयालु पाया रे, चौड़े धाड़े ॥टेर॥
गुरु मेरा दातार है रे, दान देवे ब्रह्म विद्या।
कर्म-भ्रम सब दूर विडारे, मेटे सारी अविद्या।
सूता जीव जगाया रे ॥१॥
गुरु मेरा अवतार, सारा का हित चावें।
सब जीव एक समान ज्ञान का, गाडा भर भर लावे।
भिन्न भिन्न कर समझाया रे ॥२॥
जो चाहो कल्याण जीव का, आवों सन्तों के शरणे।
देही धार आया जग माही, परमार्थ ही करणे।
साचा राह बताया रे ॥३॥
दुखिया देख दया बक्सावे, ऐसा दयानिधान।
भवसागर में भूल्योड़ा को, देव आत्मज्ञान।
अपना रूप लखाया रे ॥४॥
अंधविश्वास नास कर डारे, आस कोई ना राखे।
दास फांस को दूर विडारे, सांची सांची भाखे।
सारी पोल उड़ाया रे ॥५॥
महिमा अगम अपार है, क्या मुख करूं बखान।
ऐसी प्यारी जाऊं बलिहारी, वारूं तन मन प्राण।
"शान्ति" नित उठ शीश निवाया रे ॥६॥

भजन (११८) राग पद गाने का, विरहणी

पिया संग ले चालो अब मोय।
कहे पिव प्यारी सुण हमारी, अर्ज करूं मैं तोय।।टेर।।
मैं पिव प्यासी रहूं उदासी, रात दिवस रहीं रोय।
मेरी ओर झांको शरण में राखो, विसराओं ना कोय।।१।।
चढ़ी जवानी भई दिवानी, वैरागन गई होय।
पिव विहुणी सदा अलूणी, वृथा ऊमर दी खोय।।२।।
तुम दिल जानी सब सुख खानी, संकट हरो यह सोय।
दया विचारो मरोड़ी ना मारो, कहाँ जाऊं ना ढोय।।३।।
गुरुवर ''रामप्रकाश'' दयालु, ज्ञान दीपक दिया जोय।
''शान्ति शरण'' श्याम अब थारी, कबहूं न होय बिछोय।।४।।

भजन (११९) राग पद, गोपी के मनोभाव, विरहणी

प्यारी हठ छोड़ देओ तुम योय।
यह हठ थारो वृथा बावरी, जगत हंसेलो मोय।।टेर।।
मैं अलबेला मस्त अकेला, संग रखु ना कोय।
होय निशंक सकल में बिचरूं, कहां ले जाऊं तोय।।१।।
तुमसे मैं ना दूर बसत हूँ, यह भ्रम देओ सब खोय।
याद करें वहां तैयार मिलत हूँ, भरूं हाजरी सोय।।२।।
प्रीतम प्यारो दूर नहीं थारो, जरा उर अन्तर में जोय।
समझ निहारो नहीं है न्यारो, मेट कल्पना दोय।।३।।
प्राण प्यारी सुण बात हमारी, तुम हम भिन्न न होय।
जन्म जन्म में संग अनादि, वृथा रही क्यों रोय।।४।।
सांची प्रीत श्याम संग बांधों, सुरत शब्द में पोय।
विवेक वैराग्य रखो उर ''शान्ति'', जग से होय निर्मोय।।५।।

भजन (१२०) राग गजल, कवाली पद गाने का

श्याम तोरी मोहनी मूर्त, हमारा दिल चुराया है।।टेर।।
देख छवि श्याम की अनुपम, समर्पण हो गई पिव के।
तन मन प्राण किया कुर्बान, सु शेष कुछ बच ना पाया है ।।१ ।।
बिराजे घट घट में प्रीतम, सुना गुरु से सतसंग में।
निरखिया निश्चल नैनों से, तन मन श्याम समाया है ।।२ ।।
बह चली प्रेम की गंगा, न्हाये हम खूब मल मल के।
किया निष्पाप हृदय को, मनवे को मस्त बनाया है ।।३ ।।
पाय लीया प्रीतम प्यारे को, सम्पूर्ण भई आस मेरी।
लिपट गई अरस परस चरणन, निजानन्द अजब छकाया है ।।४ ।।
उठाया द्वैंत का पर्दा, गोद में बैठ गई निर्भय।
पाया अमर वर घट में, ''शान्ति'' शरण शीश नवाया है ।।५ ।।

भजन (१२१) राग पद गाने का

उनको मैं गुरुजी बनाऊंगी,
नहीं तो मैं नुगरी रह जाऊंगी।।टेर।।
ऐसा निश्चय ठान लिया है, पूर्ण रूप पहिचान लिया है।
उर पूर से मैं मान लिया है, इनकी शिष्या कहलाऊंगी ।।१ ।।
झीनी नजरां निरख लिया है, प्रत्यक्ष इनको परख लिया है।
इष्ट आराध्य थरप लिया है, इनको शीश नमाऊंगी ।।२ ।।
भाग भला म्हें दर्शन पाया, निरख छवि मेरा मन हरषाया।
सोच समझ शरणे आया, युग युग में गुरु गुण गाऊंगी ।।३ ।।
फिर थिरके देखा सारा, साधु सांग धर किरे भिखारा।
''रामप्रकाश'' है सबसे न्यारा, हृदय का तिमिर मिटाऊंगी ।।४ ।।

सुण शोभा म्हारी सुरति लागी, सूती नींद झिझक के जागी।
सतगुरु मोहि मिले बड़भागी, इनकी मैं शरण रहाऊंगी ॥५॥
दीनदयाल है पर उपकारी, शोभा अपार सुना अवतारी।
जस गावे जग सब नर नारी, इनसे प्रीत लगाऊंगी ॥६॥
''रामप्रकाश'' गुरुदेव हमारा, दे सत सेन किया भवपारा।
''शान्तिप्रकाश'' के प्राण आधारा, सबको प्रकट बताऊंगी ॥७॥

भजन (१२२) राग पद गाने का

भाग म्हारा जागीया ऐ, आज भई गुरुजी से भेंट ।टेर॥
सतगुरुजी घर आविया, बात बताई है रेट।
सन्मुख दर्शन पाविया, म्हारो दियो भ्रम सब मेट ॥१॥
ओ मन मेरो बड़ो हरामी, अति अज्ञानी अफेट।
पकड़ के कान पटक पछाड़ियो, दियो ज्ञान कियो सेट ॥२॥
दया करि गुरु देव दयालू, स्थिर होय गयो बेठ।
आठों याम राम धुन लागी, अब रह्यो चरण में लेट ॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, खोल्या मुक्ति गेट।
''शान्तिशरण'' गही सामर्थ की, पार पहुँचाई ठेट ॥४॥

भजन (१२३) राग पद गाने का

मुझ को लगी एक बिमारी।
क्या कहुँ कुछ कहा ना जावे, कैसे लगाऊँ कारी ।टेर॥
वात पित्त कफ सभी बन बैठ्या, हालत बिगड़ी सारी।
ना कुछ भावे नींद ना आवे, होई मरन की तैयारी ॥१॥
पढना लिखना स्मरण साधन, सब कुछ दिया विसारी।
घुट रहा दम जीव घबरावे, होई मुश्किलें भारी ॥२॥

पास नहीं मेरे फुटी कोड़ी, आई अति लाचारी।
कौन उपाय करूं गुरु साहेब, भई मानो भिखियारी ॥३ ॥
वैद्य हकीम नेड़ा ना आवे, बढ़े चढ़े ताप करारी।
मोहि देख चिकित्सक चकरावे, अनन्त उपाय कर हारी ॥४ ॥
देवे डोज़ रोज़ बदल कर, कड़वी खाटी खारी।
किस विध खाऊँ अति दुःख पाऊं, मची जीव को ध्यारी ॥५ ॥
"रामप्रकाश" सतगुरु दयालु, सुणलो अर्ज हमारी।
दर्द मिटाओ ना वार लगाओ, "शान्ति" बड़ी दुःखारी ॥६ ॥

भजन (१२४) राग पद गाने का

गुरु घर आविया ऐ, म्हारा उदय भया धन भाग ॥टेर ॥
सतगुरु आवत देख के, उपज्यो आनन्द अथाग।
चरणों शीश निमाविया ऐ, गई सुरत चित्त लाग ॥१ ॥
धन धन आज दिवस की शोभा, वरणी न जाय बेथाग।
सतगुरु मिलिया सब दुख टलिया, खुलिया मोक्ष का माग ॥२ ॥
प्याला पाया गुरु भर प्रेम का, बुझी विरह की आग।
आसा तृष्णा दूर विडारी, नाथ लियो मन नाग ॥३ ॥
सत समझाया द्वैत नसाया, उर में अखण्ड वैराग।
दी ब्रह्म विधा सारी सुविधा, होयो दुविधा त्याग ॥४ ॥
"रामप्रकाश" गुरु कृपा कीनी, उठी नींद से जाग।
"शान्तिप्रकाश" आस भई पूर्ण, चरण शरण अनुराग ॥५ ॥

भजन (१२५) राग हरजस पद गाने का

आज सतगुरुजी के जास्याँ ए।
गुरु वर्षा करे ज्ञान की, गाडा भर लास्याँ ए ॥टेर ॥

जागा भाग पुरबला आछा, दर्शन पास्याँ ए।
तन मन धन समर्पित कर चरणों, शीश निवास्याँ ए॥१॥
सतगुरु चरण गोमति गंगा, मल मल नहास्याँ ए।
अनन्त गुणों का पाप साफ, शुद्ध माफ करास्याँ ए॥२॥
जगत असार विकार की बातां, सारी छोड़ छिटकास्याँ ए।
जनम जनम का विछड़्या सन्तों से, सबसूँ मिल आस्याँ ए॥३॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा, वाने अर्ज सुणास्याँ ए।
गुरु प्रताप कहै यूं ''शान्ति'', जन्म सफल बणास्याँ॥४॥

भजन (१२६) राग लहूर पद हरजस गाने का

सत की संगत में म्हें जास्यां,
म्हानें सत री संगत मन भावे ए माय।॥टेर॥
सतसंग में म्हारा गुरुजी विराजे,
म्हें तो सन्मुख दर्शन पास्यां ए माय॥१॥
चरण कमल सतगुरु पद पूजन,
म्हेंतो हृदय का तिमिर मिटास्यां ए माय॥२॥
मूल मन्त्र म्हारे गुरुमुख वाक्य,
मैं तो श्वासों श्वास रट लास्यां ए माय॥३॥
गुरु मूर्ति सुरति कर स्थिर,
म्हें तो चिंत्तवन ध्यान लगास्यां ए माय॥४॥
गुरु प्रताप साफ शुद्ध हो,
म्हें तो सत में जाय समास्यां ए माय॥५॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ पूरा,
''शान्ति'' चरणां शीश निमास्यां ए माय॥६॥

भजन (१२७) राग पद गाने का

जग में ना कोई मेरा सब कुछ तुम।
कर दो कृपाल कृपा, शरण में हम॥टेर॥
दया के अपार सागर, दया बक्साओ।
करे है पुकार चाकर, हिये से लगाओ।
दासी उदासी प्यारी, प्यार की सनम॥१॥
तेरे ही दीदार तेरे प्यार की दीवानी।
क्यों तड़फावे प्यारे दिलवर जानी।
आरत अति है अबला, छूट रहा है दम॥२॥
करूं कुरबान तन मन धन सारा।
राखो दिलोजान श्याम प्राणों आधारा।
जपूँ निज नाम शाम, सुबह हरदम॥३॥
आवत बतावे जाने देऊं बधाई।
रह जाऊं गुलाम ताके शरण सदाई।
करु इन्तजार ऊभी ज्यादा नहीं कम॥४॥
सुन के निराली शोभा शरण आई।
भटक भटक में बड़ी दुःख पाई।
काट दो चौरासी फांसी, सतायेंगे यम॥५॥
गुरुवर "रामप्रकाश" जी है मेरे।
"शान्ति" चरण शरण है डेरे।
डूबत उभारो तारो, मिट जाये गम॥६॥

भजन (१२८) राग पद गाने का

मैं ओल्यु कर कर हारी, म्हारा देव दातार।

सतगुरु देव दातार, मैं करूं नित इन्तजार॥टेर॥
बिन दर्शन व्याकुल मैं नैना, मनवो धरे ना धीर।
काम काज मोहि कुछ नहीं सूझे, निर्बल होयो शरीर।
लग्यो उमाओ भारी, जल्दी सुणो पुकार॥१॥
थाँ बिन घड़ी ना आवड़े, जीव घणो घबरावे।
दिन सारा मैं फिर फिर काढ़ूँ, रात नीन्द ना आवे।
नित नित जोऊं बाट तिहारी, म्हारी अर्ज करो स्वीकार॥२॥
जैसे बाँझ पुत्र बिन बिलखे, यूं बिलखे म्हारो जीव।
वैसे मीन नीर बिन तड़फे, यूँ तरसे मेरो हीव।
दर्शन बिना दुखियारी, म्हारा प्यारा सिरजन हार॥३॥
ना मागूं मैं अन्न धन लक्ष्मी, ना मागूं यश मान।
चरण कमल की भक्ति देकर, करदो मम कल्यान।
यह वीनती खास हमारी, नैया हो जावे भव से पार॥४॥
दया करो गुरुदेव दयालु, शरणागत शिष्य थारो।
तन मन धन अर्पन करूं थारे, डूबत मोहि उबारो।
गुरु "रामप्रकाश" उपकारी, "शान्ति" चरणों नमस्कार॥५॥

भजन (१२९) राग पद गाने का

गुरुदेव दाता ! प्यारी लागे थारोड़ी प्रीत।
लागी प्रीत परम सुख उपजा, मान गयो मनमीत॥टेर॥
प्रीत करी तन मन धन वचन, शीश कियो अरपीत।
सर्वस्व किया न्योछावर तुम पर, निशिदिन होय नचीत॥१॥
घायल ज्यों घूमूँ जग मांहि, गावत विरह का गीत।
खान पान सम्मान सुधि विसरी, और ना आवे चीत॥२॥

मोहनी मूरत बसी उर अन्दर, तोड़ी भरमना भीत।
मुख में सुरत प्रीतम की, पल पल होवे प्रतीत ॥३॥
"रामप्रकाश" की कृपा पुरुषोत्तम, अजब निराली रीत।
"शान्ति" आय पाय लिया प्रीतम, छूटी सकल अनीत ॥४॥

भजन (१३०) राग पद गाने का

सतगुरु दाता के चरणों में, मेरो यह जीवन अरपन है ॥टेर॥
सतगुरुदेव दया के सागर, मैं हूँ चरण कमल का चाकर।
चरण शरण में आकर, पाया सन्मुख दर्शन है ॥१॥
सतगुरु ऐसी दया बक्साई, म्हारी मिटि चिन्ता दुःखदाई।
कमी रही ना कांई, हट गई सारी अरचन है ॥२॥
सतगुरु किया अति उपकारा, कर दिया भवसागर से पारा।
हो गया उर अन्दर उजियारा, देख मन मेरा प्रसन्न है ॥३॥
नित नित सतगुरु के गुण गाऊँ, महिमा अपार पार ना पाऊँ।
चरणों में शीश नमाऊँ, सब सन्बतों के सिरजन है ॥४॥
गुरु श्री मान् ज्ञान गुण खानी, क्या जाने जीव अज्ञानी।
गुरुगम उत्तम जिज्ञासु ज्ञानी, माने विरला हरिजन है ॥५॥
धन जागा भाग हमारा, सतगुरु मिलिया परम दातारा।
गुरु "रामप्रकाश" कृष्ण अवतारा, शिष्या "शान्ति" अर्जुन है ॥६॥

भजन (१३१) राग पद गाने का

मेरा सतगुरु दीनदयाल है, क्या शोभा वरणूँ प्यारी ॥टेर॥
सत्यवादी निज ज्ञानी ध्यानी, सब गुण सम्पन्न सदा सुखखानी।
युक्त मुक्त के सब विधी ज्ञानी, श्री गोपाल है॥
प्रकट्या हो संसारी ॥१॥

बाहर का कोई भेष नहीं है, अन्तर राग द्वेष नहीं है।
दुतिया रंच लवलेस नहीं है, महापूर्ण कृपाल है॥
महिमा अपरम्पारी॥२॥

चित्त में कुछ भी चाह नहीं है, जीने की परवाह नहीं है।
सद्गुणों का कोई थाह नहीं है, पूर्ण मालोमाल है॥
कमी नहीं है क्यांरी॥३॥

मेरे गुरुजी जहाँ तहाँ आवे, वो भूमि तीर्थ बन जावे।
उत्तम जिज्ञासु शरणे आवे, काटे कर्म जञ्जाल है॥
ऐसे पर उपकारी॥४॥

ऊँच नीच का भेद नहीं है, कोई किसी से खेद नहीं है।
आवागमन उम्मेद नहीं है, जीवन के प्रतिपाल है॥
ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मचारी॥५॥

सतगुरु "रामप्रकाश" जी पाया, गुरुगम सेन समझ चित्त लाया।
"शान्ति" चरणों शीश निमाया, शरण पड़ा लख बाल है॥
करुणा दृष्टि डारी॥६॥

भजन (१३२) राग पद गाने का

सईयों मोरी! मन्द हमारा भाग, मेरे सतगुरु नहीं आवे रे।टेर॥
प्रीत लगाय विसर गये मुझको ए, सईयों मोरी जाय बसे परदेश।
दरश म्हानें नाहिं दिखावे ए॥१॥
आवण जावण म्हारें सगलोही छोड़यो ए, सईयों मोरी तोड़ लीवी आदि प्रीत।
नजर म्हासे नाहिं मिलावे ए॥२॥
और एलाइची नित नई झेले ए, सईयों मोरी केवल एक म्हाने छोड़।
और सगळों के ही जावे ए॥३॥

वो भुले पर मैं नहीं भूलूं ए, सईयों मोरी करूँ कभी इंतजार।
आणे का शकुन मनावे ए।।४।।
घायल ज्यों घूमूँ जग मांहि, सईयों मैं तो सुध बुध दीवी विसार।
सकल सब पागल बतावे ए।।५।।
''रामप्रकाश'' गुरु कृपा कीजे ए, सईयों मोरी अरज करो स्वीकार।
''शान्ति'' शीश नमावे ए।।६।।

भजन (१३३) राग पद गाने का

सईयों मोरी! सावन रूखो जाय।
पल पल ऊभी पंथ निहारूँ, कब प्रीतम घर आय।।टेर।।
दिवस ना चैन रेण ना निन्दिया, जीव घणो घबराय।
अंग अंग पीर हृदय मन घायल, विरह कलेजो खाय।।१।।
नेह लगाय मेरो मन हरियो, पीव गये ललचाय।
छोड़ गये विश्वास घात कर, मैं भोली समझी नाय।।२।।
हो विपरीत विदेशों बसीया, प्रीत छोड़ छिटकाय।
गये मो से रूठ पूठ दे बैठे, दीवी सुध विसराय।।३।।
व्याकुल प्राण धरे ना धीरज, निकलन को अकुलाय।
तड़फत तड़फत रोवत विलखत, पलक चैन ना पाय।।४।।
जोजन श्याम मिला दे मुझको, रैण दिवस गुण गाय।
भूलूँ ना अहसान जीवन भर, नित नित शीश नमाय।।५।।
उतरा मास अवधि बीती, टूटी आस उपाय।
करूं इन्तजार अजहूँ नहीं आयो, मरूं जहर अब खाय।।६।।
''रामप्रकाश'' गुरु श्याम मिलायो, सो मेरे मन भाय।
''शान्ति'' दासी मुक्त विलासी, रही चरण लपटाय।।७।।

भजन (१३४) राग पद गाने का

मुझे अब तो दर्शन दे दे, तेरे द्वार आ चुका हूँ।।टेर।।
अरज सुनो प्रभो मेरी, दर्शन की प्यारी तेरी।
अब क्यों करते हो देरी, विनती सुना चुका हूँ।।१।।
दिल में तुम्हारी यादें, किसी विधि इन्हें भुला दे।
अब सुनलो मेरी फरियाद, इन्तजार पा चुका हूँ।।२।।
अब ऐसी याद सतावे, अखियाँ में आंसु आवे।
पलक भुला ना जावे, आधार ले चुका हूँ।।३।।
दिन रैन आपको जोऊँ, तेरी शरण में ऊभा रोऊँ।
वृथा जीवन खोऊँ, बेकरार हो चुका हूँ।।४।।
गुरु तुम हो दीनदयाला, दुःखियों के प्रतिपाला।
मेरा हो गया हाल बेहाला, बेकरार हो चुका हूँ।।५।।
''रामप्रकाश'' गुरुदेवा, मैं मागूं चरण की सेवा।
''शान्ति'' सहे ना बिछोवा, शरणे आ चुका हूँ।।६।।

भजन (१३५) राग पद गाने का

गुरुदेव हमारे आओ सा, इन्तजार करालां म्हें।।टेर।।
बेगा हमारे आना म्हारा, वादा भूल ना जाना।
मेरी वीनती नित चित्त लाना, पुकार कराला म्हें।।१।।
मैं दीनन दुःखियारो, बिछड़यो अनन्त युगां रो।
तुम मो पर दया विचारो सा, भवपार तिराला म्हें।।२।।
रेन दिवस गुण गास्युं, थाने नित ही शीश निमासुं।
भाग कर सामे आस्युं सा चरण पड़ाला म्हें।।३।।

सतगुरु ''रामप्रकाशा'', म्हारा सारा मिटाओ सांसा।
''शान्ति'' पूरण आसा, विश्वास करालां म्हें ॥४॥

भजन (१३६) राग पद गाने का

शिष्य अवश्य आप के आऊँ ला, इन्तजार करो चाहे थे।टेर॥
मैं करूं थारे संग वादा, मेरा पक्का है इरादा।
और कहुं क्या ज्यादा, इतबार करो चाहे थे॥१॥
क्यूँ शोच करो थे मन में, संशय मिटाऊँ छिन में।
निशिदिन रहो आनन्द में, स्वीकार करो चाहे थे॥२॥
थांसे दूर ना रहसूँ, थारो संकट सब हर लेस्यूं।
सत उपदेश थाने देस्यूं, विश्वास करो चाहे थे॥३॥
क्यों समझो मोहे न्यारो, थारो मेटो हिये अन्धारो।
सत्य वचन सुन म्हारो, भवपार तरो चाहे थे॥४॥
दुतिया भ्रम विडारो, तब परसो प्रीतम प्यारो।
यह निश्चय उर धारो, निज ध्यान धरो चाहे थे॥५॥
सुन शिष्य सुरज्ञानी, कहुं यथार्थ बानी।
यह दो दिन की जिन्दगानी, बेकार करो ना थे॥६॥
सतगुरु सही समझावे, क्यों बात समझ ना आवे।
बिन समझ्याँ दुःख पावे, विचार करो चाहे थे॥७॥
धर विश्वास पक्का, थारी सारी मिटाऊँ शंका।
लाओ अनुभव डंका, इन्कार करो ना थे॥८॥
सुण ले ''शान्ति'' साची, थारे मौज बणादी आछी।
अब आवण॰ा ना भव पाछी, प्रचार करो चाहे थे॥९॥

[राजस्थानी साक्षरता अभियान]

भजन (१३७) राग पद गाने का

पढाई कर लो सब नर नार।
अर्ज कराँ सुण लीज्यो सारा, पढल्यो साची लगन लगार।।टेर।।
दादी दादा बाबो बडिया, पढल्यो काका काकी।
भाई भतीजा बहिन भाणजी, रहणा नाहीं बाकी।
पढल्यो सारो हि परिवार।।१।।
एक एक कर जावो, इकावली बारहखड़ी लीखो।
ज्यादा नहीं तो कम से कम थे, दस्खत करणा सीखो।
शिक्षित हो जावे ओ संसार।।२।।
राशन लाने जाओ घरां से, जाय लाइन में लागो।
डीलर तो दस्खत ही मांगे, करो अँगूठो आगो।
लगाद्यो पकड़ कोई नौ बार।।३।।
टाइम देखणो आवे कोनी, घड़ी बाँध कर होवे करड़ी।
देखा देखी चाल पकड़ ली, ज्यों एवड़ में लरड़ी।
खाने पीने में तूँ है हुशियार।।४।।
सब नेता मिल मतो उपायो, अणपढ छोड़ा नाहीं।
गाँव गाँव और नगर जिले में, अरु भारत देश के माहीं।
मिटास्यां अज्ञान भर्‌यो अन्धकार।।५।।
ओ मोको ना खोवो हाथ से, और आवे ना ऐसो।
पाटी बड़तो सारी सहायता, थारों लागे ना पैसो।
दयालु आई है सरकार।।६।।

विश्व बैंक की अनुकम्पा से, मिले सहायता सारी।
सर्व अधिष्ठान सुजान शिरोमणि, अटूट खजाना भारी।
जारी शोभा अपरम्पार ॥७॥
आय चेतावे मुफ्त पढावे, अब अणपढ ना रहणो।
''शान्ति'' कहै थे बहिन भाइयों! मानो म्हारो कहणो।
पढण ने हो जाओ सब तैयार ॥८॥

भजन (१३८) राग बिलावल आरती पद

जय गुरुदेव हरे, ॐ जय गुरु देव हरे।
आरत जिज्ञासु सेवक सब जग, जग में वन्दन करे।।टेर॥
अजर अमर अविनासी, तुरिया अतीत परे।
खण्ड ब्रह्मण्ड सब व्यापक, जल थल चर अचरे ॥१॥
निर्विकार शुद्ध चेतन, झलक खलक जरे।
सर्वाधिष्ठान संचालक, मालिक सब जगरे ॥२॥
निर्गुण सुगुण बड़ा देवा, सुमिर्‌या संकट टरे।
सुखदायक वरनायक, सहायक हो सबरे ॥३॥
गुणसागर करुणाकर, आगर जग सगरे।
अलख स्वरूप निरंजन, कर भजन सजन उबरे ॥४॥
अगम अपार अविगत, अविचल अटल खरे।
अज अद्वैत अनामी, स्वामी सकल धरे ॥५॥
सच्चिदानन्द फन्द विनासक, ''शान्ति'' कारज सरे।
शरणे आवे सुख पावे, आवागमन विडरे ॥६॥

भजन (१३९) राग बिलावल आरती पद

जय श्री गुरु ज्ञानी, ओम जय श्री गुरु ज्ञानी।
निराकार निरमोही निश्चल निरवाणी॥टेर॥
अजर अमर अविनासी, आगर अगवानी।
अगम अपार अविगत, पार नहीं पानी॥१॥
करुणामई करतारा, सब सुख की खानी।
अरज करे भक्त सब शरणे, शुद्ध बुध दो दानी॥२॥
अजय अडोल अकर्ता, अनुपम है कहानी।
अद्वय अद्वैत अजन्मा, निरमल शुद्ध सानी॥३॥
सिरजणहार सकल के, श्रेष्ठ श्रीमानी।
शरणे आवे गुण गावे, मिट जावे सब हानी॥४॥
आनन्द रूप अनुपम, अद्‌भुत उपरामी।
असल अचाय अनामी, निकलंक निष्कामी॥५॥
सर्वाधार समद्रष्टि, सब जग निगरानी।
जीवन प्राण आधारे, दाता दिलजानी॥६॥
जो सुमिरे सुख पावे, जानी अनजानी।
दुरमति दूर नसावे, सुधरे जिन्दगानी॥७॥
श्री सतगुरु जी की आरती, ध्यान धरे ध्यानी।
भनत भक्त भोली "शान्ति", सतगुरु महरबानी॥८॥

भजन (१४०) राग बिलावल पद

जय गुरु अविनासी, ॐ जय गुरु अविनासी।
खण्ड ब्रह्मण्ड में व्यापक, पूर्ण प्रकाशी॥टेर॥
अगम अपार अविचल, अविगत थिर थासी।
निज निरवाण अचाही, निकलंक निरवासी॥१॥

दीनदयाल दयालु दाता, सब सुखकी रासी।
शरणे आवे सुख पावे, कट जावे फांसी ॥२॥
गंगा जमुना गोदावरी, तुम तिरण कासी।
जोजन मलमल न्हाये, पाप उतर जासी ॥३॥
अलख निरजंन देवा, हित चित्त से ध्यासी।
जन्म मरण मिट जाये, निर्भय पद पासी ॥४॥
परम पूज्य पुरुषोत्तम, घट अमरापुर वासी।
चिंतवन ध्यान लगावे, दुःख दूरा नासी ॥५॥
''रामप्रकाश'' गुरु सामर्थ, पल पल रट लासी।
सनमुख हो गम पावे, मिट जाये उदासी ॥६॥
श्री सतगुरुजी की आरती, जो जन नित गासी।
भनत भक्त भोली ''शान्ति'', चरणों की दासी ॥७॥

दोहा छन्द

''रामप्रकाश'' गुरु आविया, ले जग में अवतार।
''शान्ति'' चरण वन्दन करे, निशदिन बारम्बार ॥१॥
''रामप्रकाश'' गुरुदेवजी, शोभा अपरम्पार।
''शान्ति'' शरण रक्षा करो, नित नित हि नमस्कार ॥२॥
''शान्ति'' सतगुरु देव को, बारम्बार प्रणाम।
चरण कमल बन्दन करूं, नित उठ सुबह शाम ॥३॥
सतगुरु ''रामप्रकाश'' जी, मिलिया दया निधान।
दया करि दुविधा हरी, सेवक अपना जान ॥४॥
सतगुरु रामप्रकाशजी, धीर वीर विद्वान।
''शान्ति'' चरण वन्दन करें, तन मन धन कुर्बान ॥५॥

सतगुरु "रामप्रकाश" जी, चरण नमाऊं शीश।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, परब्रह्म है जगदीश॥६॥
सतगुरु "रामप्रकाश" जी, मस्तक धरिया हाथ।
"शान्ति" शरण संशय मिटा, मिले श्री रघुनाथ॥७॥
सतगुरु "रामप्रकाश" जी, सुनिये मेरी पुकार।
"शान्ति" पुकारे वीनती, सामर्थ गुरु के द्वार॥८॥
"शान्ति" समझ निहारिये, गुरु सम दूजा नाहि।
भवसागर में डूबता, सतगुरु झेली बाहि॥९॥
अनन्त उपमा योग्य है, सतगुरु "रामप्रकाश"।
डूबत आय उभारिया, सुन आर्त अरदास॥१०॥
सतगुरु "रामप्रकाश" जी, दीन बन्धु कृपाल।
रक्षा करें संकट हरे, "शान्ति" शरण दयाल॥११॥
सतगुरु "रामप्रकाश" जी, बहुत बड़े विद्वान।
"शान्ति" इन संसार में, कोई ना आप समान॥१२॥
सतगुरु "रामप्रकाश" जी, तारण आये मोय।
दया करी दुविधा हरि, उर दीपक दियो जोय॥१३॥
साहब सेती वीनती, सन्तों को अरदास।
"शान्ति" के हृदय बसो, सतगुरु "रामप्रकाश"॥१४॥
परम पूज्य गुरुदेवजी, सच्चिदानन्द स्वरूप।
श्रद्धा से पूजूँ सदा, श्रीपद केवल अनूप॥१५॥
रामप्रकाश गुरुदेवजी, मस्तक धरिया हात।
"शान्ति" शरण कृपा करी, साची बताई बात॥१६॥
रामप्रकाश गुरु भेटिया, दया दास पर कीन।
"शान्ति" नित वन्दन करूँ, हरदम गुरु गम चीन॥१७॥

कुण्डलिया छन्द

हेत करो भगवान से, भजन करो मन लाय।
मनुष्य जन्म मौको मिल्यो, अब तो चेतन थाय॥
अब तो चेतन थाय, जन्म सब से है आछो।
कर सतसंग सुधार, और मिले ना पाछो॥
शरणे आओ गुण गाओ, कंचल मिलाओ ना रेत।
लेखो लेसी रामजी, ''शान्ति'' कर हरि हेत॥१॥

शान्ति सत मत हारिये, जब तख पींजर श्वास।
प्राण जाये प्रण अमर रहे, कर हृदय विश्वास॥
कर साचो विश्वास, तजूँ ना निश्चय मेरा।
गुरु चरणों का दास, देऊं ना जग में फेरा॥
सतगुरु रामप्रकाश जी, गुण गाऊँ तज भ्राँति।
अभय निर्भय वरद के, शरण में आई ''शान्ति''॥२॥

करोड़ नमो गूदड़ गद्दी, नमो वैष्णव सम्प्रदाय।
चार धाम द्वारा नमो, आर्त लिया अपनाय॥
आर्त लिया अपनाय, श्रीवैष्णव आदि प्रणाली।
उत्तमरामप्रकाश को, नमो परम्परा गुण शाली॥
''शान्ति'' करें कोटिक नमो, विनती है कर जोड़।
नमो सन्त गुरुदेवजी, वन्दन लाख करोड़॥३॥

दास शरण संवत भलो, बासठ ज्येष्ठ के मांहि।
शुक्ल महेश नवमी गुरु, पकड़ी सतगुरु बांहि॥

पकड़ी सतगुरु बांहि, काढ्या भव से बारे।
गुरु दीक्षा दिन ऊगते, हाथ शिर ऊपर धारे॥
पूर्व पुण्य से भेटिया, श्री गुरु रामप्रकाश।
वार वार वन्दन करूँ, शरणे "शान्ति" दास॥४॥

श्री गुरु रामप्रकाशजी, कृपा करो महाराज।
ऊभी आर्त अरजी करे, सुणिये गरीब निवाज॥
सुणिये गरीब निवाज, दुःखी है दास तिहारो।
सध्रो सुधारो काज, बिगड़्यो जन्म हमारो॥
हो उदास कोयल ज्यों कू-कू, दो दर्शन माहि आज।
श्री गुरु रामप्रकाशजी, कृपा करो महाराज॥५॥

अर्जी करूँ गुरुदेव आपजी, बेग पधारो देश।
ऊभी पुकारूँ उनमनी, करुणा करो नरेश॥
करुणा करो नरेश, दया के सागर भारी।
शोभा सुणी विशेष, आई में शरणो थारी॥
दया विचार संकट हरो, पेश पड़े नहीं गर्जी।
"शातिदास" नित शरण में, करे सदा शुभ अर्जी॥६॥

***

॥ इति श्री शान्ति भजन दीपिका ॥